बुनियादी शिक्षा

एक नई कोशिश

फरवरी–अप्रैल, 2008 अंक – 18

कैसी हो अर्थपूर्ण शिक्षा?

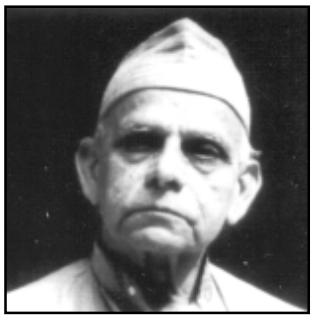

श्रृद्धांजली

दिनांक 15 मार्च 2008 को दयाल जी इस दुनिया से हमेशा के लिए बिदा हो गए। उनके चले जाने से एक रिक्तता हो गई। दयाल जी चाहे हमारे बीच में नहीं है मगर बुनियादी शिक्षा के क्षेत्र में उन्होंने अमूल्य योगदान दिया है।

श्री दयालचन्द जी सोनी, विद्या भवन के पूर्व छात्र तथा विद्या भवन बुनियादी मदरसा के प्रथम प्रधानाध्यापक, के निधन के समाचार से विद्या भवन के सभी पूर्व तथा वर्तमान अधिकारीगण, अध्यापकगण तथा कार्यकर्त्तागण स्तब्ध रह गये हैं। हम सब उन्हें प्यार तथा सम्मान से दयालजी ही सम्बोधित करते थे।

श्री दयालजी गांधीजी की वर्धा स्कीम के अन्तर्गत प्रतिपादित ''बुनियादी शिक्षा'' को विद्या भवन में मूर्त रूप प्रदान करने वाले प्रथम प्रणेता थे। उन्होंने अपने जीवन को निस्पृह भाव से बुनियादी शिक्षा, सेवा प्रसार कार्य, साक्षरता, प्रौढ़ शिक्षा, अनौपचारिक शिक्षा आदि विभिन्न समाज सेवा के कार्यो में लगा दिया। वे हर परिस्थिति में विद्या भवन के साथ भीष्म पितामह की भांति खड़े रहे। विद्या भवन उनकी सेवाओं को कभी भी भुला नहीं सकेगा।

श्री दयालजी ने अपने जीवन काल में अनेक पुस्तकें भी लिखीं तथा राष्ट्रीय स्तर पर भी उन्हें मदन मोहन मालवीय पुरूस्कार प्रदान किया गया तथा पूर्व प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी ने उन्हें टैगोर साक्षरता पुरूस्कार से भी नवाजा। विद्या भवन अपने इस मनस्वी को कभी भुला नहीं पायेगा।

हालांकि उनका निधन, विद्या भवन और समाज के लिये हुई एक अपूरणीय क्षति है फिर भी उनका प्रखर व्यक्तित्व हमें सदैव प्रेरणा देता रहेगा।

दु:ख की इस वेला में प्रार्थना है कि वह दिवंगत आत्मा को शांति तथा शोक संतप्त परिवारजनों को यह आघात सहन करने की शक्ति प्रदान करें।

हम है
विद्या भवन परिवार के सभी सदस्य

बुनियादी शिक्षा
एक नई कोशिश

फरवरी–अप्रैल 2008 अंक–18

परामर्श
हृदय कांत दीवान
सुदर्शन आयंगार

संपादक
के. आर. शर्मा

सलाहकार
भाग चंद्र कुमावत
गोविन्द रावल
प्रवीण डाभी
भरत जोशी
सुधा भण्डारी

चित्रांकन
प्रशांत सोनी

कंप्यूटर सेटिंग
इसरार अहमद

संपादकीय पता
विद्या भवन शिक्षा संदर्भ केंद्र
फतहपुरा, मोहनसिंह मेहता मार्ग
उदयपुर (राज.) 313 004
फोन : (0294) 2451497
Email : vbsudr@yahoo.com

मुद्रक : संजय प्रिन्टर्स, उदयपुर

इस अंक में

(1) टीएलएम बनाम टीचिंग ऐड 7
– हृदय कांत दीवान
(2) अर्थपूर्ण शिक्षा बनाम बुनियादी शिक्षा 12
– चन्द्रशेखर भारती
(3) शिक्षा के वास्तविक लक्ष्य बुनियादी तालीम में समाए हैं 15
– सुशील कुमार जैन
(4) शिक्षा ऐसी हो कि बच्चें व्यस्त रहे 17
– ललित किशोरी भट्ट
(5) शिक्षा और बालक के अधिकार 19
– जयश्री द्विवेदी
(6) उदयपुर संभाग की डाइट्स में बुनियादी शिक्षा 21
– के. आर. शर्मा
(7) एक बैठक प्रधान अध्यापकों के साथ 24
(8) बुनियादी शिक्षा केन्द्रित प्रकोष्ठ 26
(9) एक यात्रा बुनियादी स्कूल की 28
– दीप्ति शर्मा
(10) गांधीवादी शिक्षा अध्ययन केन्द्र 29
– भाग चन्द्र कुमावत
(11) सर, गुलाब के फूल क्या होते हैं? 31
– डी.एस. पालीवाल
(12) पुस्तकें पढ़ें, आगे बढ़ें 33
– वि.वि. सिंह
(13) ऐसे मनाई ईद 37
– लाल शंकर चौबीसा
(14) शहनाज़ की डायरी 39
– शहनाज़ डी.के.
(15) नई तालीम की प्रासंगिकता 45
– गोविंद रावल
(16) शिक्षा का सशक्त माध्यम–प्रवास विद्या 49
– राधा भट्ट

यह न्यूज़लेटर "बुनियादी शिक्षा : एक नई कोशिश" परियोजना के तहत विद्या भवन बुनियादी विद्यालय, रामगिरि परिसर में स्थापित हस्त निर्मित कागज़ इकाई में तैयार कागज़ पर छापा गया है।

सहयोग राशि : 15 रुपए

सौजन्य : सर रतन टाटा ट्रस्ट, मुंबई एवं राष्ट्रीय ग्रामीण संस्थान परिषद् (NCRI) हैदराबाद

चिट्ठी–पत्री

दृष्टि सम्पन्न करने वाली एकमात्र पत्रिका

विद्या भवन द्वारा प्रकाशित पत्रिका ''बुनियादी शिक्षा : एक नई कोशिश'' के कुछ अंकों के स्वाध्याय का अवसर मिला। बुनियादी शिक्षा को वर्तमान शैक्षिक परिदृश्य और संदर्भ में देखने की जो दृष्टि इस पत्रिका से मिलती है वह अन्यन्त्र दुर्लभ है। दृष्टि सम्पन्न करने वाली इस एकमात्र पत्रिका के प्रकाशन हेतु बधाई।

पत्रिका का प्रत्येक पृष्ठ सिर्फ सूचनाओं का अम्बार नहीं लगता बल्कि बुनियादी शिक्षा को इस पत्रिका का योगदान है कि इसने बुनियादी शिक्षा की अवधारणा को ऐसी ऐतिहासिक आवाज़ बनाया है, जिसकी आवाज को आज़ाद भारत में 'न' सुनने देने की तमाम कोशिशें की जाती रही हैं। पत्रिका की उपादेयता इससे और बढ़ जाती है जब शिक्षा के नये विमर्श में यह बुनियादी शिक्षा को गुणवत्तापूर्ण स्कूली शिक्षा के केन्द्र में रखकर रेखांकित करती है।

अंक 17 बेजोड़ बन पड़ा है। हृदयकांत दीवान का आलेख, ''घर में लायक, स्कूल में नालायक'', तो शैक्षिक–विमर्श को नयी ज़मीन देता है। बुनियादी तालीम का पाठ्यक्रम और बिहार के समान स्कूल प्रणाली आयोजना के प्रतिवेदन में प्रतिबिम्बित बुनियादी शिक्षा के स्वरूप वाला अध्याय महत्वपूर्ण होने के साथ–साथ दिशाबोध कराने वाला भी है।

पत्रिका के निर्बाध प्रकाशन और दीर्घ–सार्थक जीवन की कामना है।

ज्ञानदेव मणि त्रिपाठी
अकादमिक संयोजक
पाठ्यक्रम एवं पाठ्यपुस्तक विकास समिति
सीमैट (एस.सी.ई.आर.टी.) महेन्द्रू, पटना–6

एक आवाज़ यह भी

बुनियादी शिक्षा के आयामों पर हमने जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थानों में संकाय सदस्यों एवं पूर्व सेवाकालीन छात्रों के साथ विमर्श किया। पूर्व सेवाकालीन छात्रों से हमने अनुरोध किया कि वे बुनियादी शिक्षा को लेकर अपने मत प्रकट करें। यहां प्रस्तुत है संकाय सदस्यों और छात्र–छात्राओं के मत–

सराहनीय कदम

प्रसन्नता है कि बुनियादी शिक्षा को पुनः स्थापित करने एवं गांधी जी के आदर्श 'रामराज्य' की स्थापना करने का संकल्प लेकर विद्या भवन संस्था 'बुनियादी शिक्षा : एक नई कोशिश' अंक प्रकाशित करती है। साथ ही विद्या भवन इस दिशा में सक्रिय रूप से काम कर रही है। निश्चित ही यह प्रयास सराहनीय है। इसके लेख व क्रियात्मक प्रयोग यदि शिक्षक समझकर हृदयगंम कर विद्यालय में लागू करें तो विद्यार्थी स्वावलंबी व सर्वांगीण विकास की ओर अग्रसर होगा।

ललित किशोरी भट्ट
व्याख्याता
जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, डूंगरपुर

आत्मनिर्भर बनाने के लिए बुनियादी शिक्षा ज़रूरी

बुनियादी शिक्षा आधुनिक युग में बहुत महत्वपूर्ण है। आज के युग में बुनियादी शिक्षा छात्र–छात्राओं को आत्मनिर्भर रहना सिखाती है। बुनियादी शिक्षा बालकों को बिना किसी दबाव के प्रायोगिक शिक्षा के आधार पर शिक्षित करने में अहम भूमिका निभाती है। बुनियादी शिक्षा में हमने ''घर में लायक व स्कूल में नालायक'' लेख पढ़ा। इसमें बच्चों को उचित रूप से शिक्षा दी जाए इसके बारे में समझ बनाने की बातें कही गई है। बुनियादी शिक्षा से बालक–बालिकाएं अपने आप ही कुछ भी कार्य करने में सक्षम होते है। इसके द्वारा बालकों को रोजगार न मिलने पर भी अपने द्वारा सिखे गए ज्ञान का उपयोग वह अपने जीवन में कभी भी कर सकते है। बुनियादी शिक्षा बच्चों को विद्यालय स्तर पर देनी चाहिए ऐसा हमारा मानना है।

मीना मेनारिया
एस.टी.सी. प्रथम वर्ष
जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, उदयपुर

जीवन की शिक्षा बुनियादी शिक्षा से संभव

हमारे जीवन में बुनियादी शिक्षा का बहुत ही महत्वपूर्ण स्थान है। बुनियादी शिक्षा शिक्षण की ऐसी पद्धति है जिसके द्वारा व्यक्ति का सर्वांगीण विकास किया जा सके।

- बुनियादी शिक्षा से आशय ऐसी शिक्षण व्यवस्था से है जिसके द्वारा व्यक्ति के जीवन को सुखी एवं समृद्ध बनाने का सफल प्रयास किया जाए।
- गांधी जी ने बुनियादी शिक्षा पर इसलिए जोर दिया क्योंकि इससे व्यक्ति को स्वावलम्बी बनाया जा सकता है।

आधुनिक जीवन में ऐसी शिक्षा प्रक्रिया का चलन है जो कि दोषपूर्ण है। शिक्षा का प्रमुख उद्देश्य व्यक्ति के जीवन को सुखी एवं समृद्ध बनाना हैं।

आजकल शिक्षा के नाम पर विभिन्न निजी विद्यालयों में छात्रों से मोटी–मोटी रकम वसूली जाती है। जबकि छात्रों को शिक्षा के नाम पर ठगा जाता है। यदि हमें दोषपूर्ण शिक्षण पद्धति से मुक्त होना है, तो बुनियादी शिक्षा पर जोर देना होगा।

हमें भी अगर शिक्षा के क्षेत्र में नवीन परिवर्तन करने हैं तो बुनियादी शिक्षा को अपनाना होगा। तभी हम सफल हो सकते हैं।

गरिमा शर्मा
एस.टी.सी. प्रथम वर्ष
जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, उदयपुर

शिक्षक की भूमिका महत्वपूर्ण

मैंने बुनियादी शिक्षा की पत्रिका पढ़ी। मुझे इसके लेख अच्छे लगे। बुनियादी शिक्षा के प्रथम लेख 'घर में लायक, स्कूल में नालायक' में बताया गया है कि 5–6 वर्ष का बालक स्कूल में भर्ती होने पर हिचकिचाहट के कारण शिक्षा ग्रहण करने में संकोच प्रकट करता है। बालकों को कोरी शिक्षा देने के बजाय शिक्षण विधियों जैसे खेल विधि के माध्यम से शिक्षा प्रदान करनी चाहिए। इसमें शिक्षक की भूमिका भी महत्वपूर्ण है। जिससे बालक अपने शिक्षकों से मित्रतापूर्वक व्यवहार करने के कारण अपनी भावनाओं को उजागर कर सकेंगे।

पूर्णिमा सोनी
एस.टी.सी. प्रथम वर्ष
जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, उदयपुर

बुनियादी शिक्षा बनाम श्रम की शिक्षा

बुनियादी शिक्षा में बताया गया है कि विद्यार्थियों को प्रायोगिक रूप से बताया जाना चाहिए। विद्यार्थियों का सृजनात्मक व भावात्मक रूप से विकास किया जाना चाहिए। बुनियादी शिक्षा का अर्थ है काम से सीखना।

विद्यार्थी की शिक्षा किताबी शिक्षा नहीं होनी चाहिए बल्कि पाठ्यक्रम को खेल विधि एवं वास्तविक रूप से बताया जाना चाहिए।

''बुनियादी शिक्षा'' का 17वां अंक बहुत अच्छा है। विद्यार्थियों को एक कमरे में बंद करके शिक्षा नहीं देनी चाहिए बल्कि उनका सहयोग लेकर पढ़ाया जाना चाहिए।

सोनू टेलर
एस.टी.सी. प्रथम वर्ष
जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, उदयपुर

बिना दबाव की शिक्षा : बुनियादी शिक्षा

बुनियादी शिक्षा का अर्थ ''बालकों को बिना किसी दबाव के प्रायोगिक शिक्षा के आधार पर शिक्षित करना है।'' आधुनिक युग की नींव तैयार करने में आज बुनियादी शिक्षा का महत्वपूर्ण सहयोग हो सकता है। यदि हम छात्रों या बालकों को इस शिक्षा के आधार शिक्षित करें तो हो सकता है कि हमारी भावी पीढ़ी अपेक्षाकृत अधिक मजबूत होगी। क्योंकि हम भी एक शिक्षक बनने जा रहे हैं तो हम भी जहां तक हो सके बच्चों को बिना दबाव के स्वतंत्र रूप से शिक्षित करने का प्रयास करेंगे। इस बात से हम सहमत हैं कि बालक को यदि देख कर और सुनकर सीखने के मौके दिया जाए तो वह ज्यादा अच्छी तरह से सीख सकेगा। तो मेरे हिसाब से बुनियादी शिक्षा को लागू करना श्रेयस्कर होगा।

अन्तरा मेहता
एस.टी.सी. प्रथम वर्ष
जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, उदयपुर

रटंत शिक्षा घातक है

बुनियादी शिक्षा के बारे में स्वामी विवेकानन्द का विचार इस प्रकार है– ''मनुष्य में अन्तर्निहित पूर्णता को व्यक्त करना ही शिक्षा है।''

इस प्रकार की शिक्षा मनुष्य को उसकी क्षमताओं से परिचित कराती है, जिससे वह कार्यकुशल बन सके। शिक्षा के इस उद्देश्य को पूर्ण करने में बुनियादी शिक्षा का योगदान अहम भूमिका निभाता है।

बुनियादी शिक्षा से तात्पर्य मनुष्य को दी जाने वाली जीवन की शिक्षा से है। अतः मनुष्य को पुस्तकीय ज्ञान देने की अपेक्षा बुनियादी शिक्षा दी जानी चाहिए।

विद्यालय में वर्तमान समय में पुस्तकीय ज्ञान दिया जाता है। बालकों को पुस्तकीय ज्ञान रटना पड़ता है। इस प्रकार का ज्ञान प्राप्त करने से शिक्षा पूरी करने पर सभी मनुष्य (बालक) नौकरी पाने की चाह रखने लगते है। इस चाह में इधर–उधर भटकते रहते है। नौकरी नहीं मिलने पर बेरोजगारी के शिकार हो जाते हैं, और अपने आपको इस धरती पर भार समझने लगते हैं। युवा इस भाररूपी तनाव से मुक्त होने के लिए अपनी जीवन लीला स्वयं अपने ही हाथों से समाप्त कर देते हैं। लेकिन यदि इन युवाओं को बुनियादी शिक्षा दी होती तो, नौकरी के अभाव में अपनी जीविकोपार्जन के लिए किसी भी प्रकार का काम कर सकते और आत्महत्या नहीं करते।

वर्तमान समय में ऐसी परिस्थितियों का सामना करने के लिए बालकों को बुनियादी शिक्षा देकर पहले से तैयार करना जरूरी है।

गजेन्द्र प्रसाद सुथार
एस.टी.सी. प्रथम वर्ष,
जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, उदयपुर

टीएलएम बनाम टीचिंग ऐड

हृदय कांत दीवान

आजकल टी.एल.एम. की बहुत चर्चा है। कोई भी कक्षा हो अथवा कोई भी विषय हो, हर संदर्भ में टी.एल.एम. को अचूक हल के रूप में देखा जाता है। ऐसा समझा जाता है कि टी.एल.एम. का उपयोग कक्षा में कोई जादू कर देगा जिससे सब कुछ बदल जाएगा। टी. एल.एम. उपयोगी हो सकता है लेकिन इस प्रश्न पर विचार करना आवश्यक है कि वह किस परिस्थिति में और किस प्रकार से उपयोगी हो सकता है। यह भी समझना जरूरी है कि टी.एल.एम. क्या है, और वह सब कुछ जो टी.एल.एम. के नाम पर होता है, टी.एल. एम. क्यों नहीं है।

अकसर टी.एल.एम. बनाने के लिए कार्यशालाएं होती हैं। थर्मोकोल, चार्ट पेपर, रंग व अन्य सभी तरह की सामग्रियां सामने रखी जाती हैं। शिक्षक कोशिश करके अपनी कला व कल्पना का प्रदर्शन करते हैं और सुन्दर से सुन्दर मॉडल बनाते हैं। इन मॉडलों के बारे में, व इनके उपयोग के बारे में सोचें तो कई विचार दिमाग में आते हैं:

(1) क्या यह मॉडल बच्चे को सोचने में मदद करते हैं?

अथवा

सिर्फ कुछ जानकारी प्रदर्शित करते हैं।

(2) क्या बच्चे इनके साथ कुछ कर पाते हैं? इन्हें छू कर, बदल कर देख सकते हैं?

अथवा

इनसे बच्चों को दूर ही रहना है क्योंकि छूने से ये टूट जाते हैं। खराब हो जाते हैं।

(3) बच्चे ये मॉडल काफ़ी समय तक अपने पास रख सकते हैं और हर बच्चा इसका उपयोग कर सकता है।

अथवा

एक ही बनाना इतना मुश्किल है। एक मॉडल बनाने में ही इतना समय लगता है और खर्चा होता है कि प्रत्येक बच्चे के लिए मॉडल उपलब्ध हो ऐसा संभव नहीं है।

अगर जिस सामग्री की हम बात कर रहे हैं उस के गुण 'अथवा' के बाद वाली श्रेणी के हैं तो यह सामग्री शिक्षण अधिगम सामग्री यानी टी.एल.एम. नहीं है। टी. एल.एम. का सरल अनुवाद है – सीखने–सिखाने की सामग्री। 'अथवा' के बाद की श्रेणी में आने वाली सामग्री में सीखने की और सिखाने वालों की भूमिका लगभग नगण्य है। यह तो शिक्षण सहायक सामग्री यानी सिर्फ टीचिंग ऐड है।

टी.एल.एम. के बारे में सोचते समय यह हुआ पहला सवाल, जिसे हमें समझना है। यानी यह छांटना कि कौनसी सामग्री टीचिंग ऐड व कौनसी टी.एल.एम. है। घंटों मेहनत से बनाई और बच्चों के लिए कुछ ही पल के बाद उससे कुछ करने को नहीं। अकसर ऐसी सामग्री कई वर्षों तक प्रधानाध्यापक के कमरे अथवा डाइट के कमरों को सज़ाती है और आने–जाने वाले शिक्षा विभाग के लोगों को दिखाने के लिए होती है। इसमें से कुछ सामग्री का उपयोग तो फिर भी कभी–कभी बच्चों को कुछ करने, कुछ सोचने, कुछ खोजने का मौका देने के लिए किया जा सकता है। बच्चों के लिए कुछ ऐसे कार्य सोचे जा सकते हैं जिसमें वे स्वयं शामिल हों, जूझें, एक चुनौती महसूस करें, सीखें और मज़ा लें। किन्तु इसमें अधिकांश सामग्री इतनी शिक्षक केन्द्रित और जानकारी आधारित होती है कि उससे बच्चों को अपने ज्ञान की रचना करने का कोई मौका नहीं मिल सकता।

बच्चों के लिए कुछ ऐसे कार्य सोचे जा सकते हैं जिसमें वे स्वयं शामिल हों, जूझें, एक चुनौती महसूस करें, सीखें और मज़ा लें। किन्तु इसमें अधिकांश सामग्री इतनी शिक्षक केन्द्रित और जानकारी आधारित होती है कि उससे बच्चों को अपने ज्ञान की रचना करने का कोई मौका नहीं मिल सकता।

अब हम सिर्फ टी.एल.एम. के बारे में बात करेंगे। यानी सामग्री जो बच्चों को सीखने में मदद करती है, जो ज्ञान को बढ़ाने के उनके प्रयास में मदद करती है। जिसे बच्चे छू सकते हैं, उपयोग कर सकते हैं और

उससे अन्य गतिविधियां भी कर सकते हैं। इस परिभाषा में कुछ उत्तर तो मिल जाता है कि बच्चों को टी.एल.एम. क्यों चाहिए। टी.एल.एम. बच्चों को ऐसे मौके दे सकता है जिसमें वे स्वयं अपने ज्ञान का निर्माण करें। सामग्री को उलट–पलट के देखने से, जो हुआ उसका विश्लेषण करने से, दोबारा करके देखने से या फिर अभ्यास करने से ही सीखने में मदद मिलती है। उदाहरण के तौर पर अमूर्त अवधारणाओं को समझने के लिए उनके ठोस प्रतिमानों (टी.एल.एम. का एक रूप) को देखने, उनसे उठा–पटक करने, विभिन्न संदर्भों में अलग–अलग तरह से उसका सामना करने व उनका उपयोग चुनौतिपूर्ण परिस्थितियों में करने से अवधारणाओं की समझ बनती है और समृद्ध होती है।

यहां यह कहना भी आवश्यक है कि कुछ समय के बाद यह भी जरूरी होता है कि बच्चे अवधारणाओं के बारे में और अवधारणाओं को बगैर ठोस प्रतिमानों (टी.एल.एम. का एक रूप) के समझ सकें और उनका उपयोग कर सकें। इससे तात्पर्य यह है कि सामग्री का उपयोग एक माध्यम है, लक्ष्य नहीं है। जब तक हमें लक्ष्य स्पष्ट नहीं होगा सामग्री हमारी कोई मदद नहीं कर सकती। एक और बात कहना उचित होगा कि अलग–अलग विषयों, उनके अलग–अलग हिस्सों, अलग–अलग प्रकार की अवधारणाओं और अलग–अलग उम्र व अलग–अलग स्तर तक सीख चुके बच्चों के लिए टी.एल.एम. का एक ही अर्थ नहीं हो सकता। उसकी प्रकृति व उसके उपयोग का तरीका भी बहुत अलग–अलग हो सकता है। टी.एल.एम. के संदर्भ में बहुत सी बातों पर चर्चा हो सकती है परन्तु इस लेख में हम सब पर बात नहीं करेंगे।

यह सोचा जाता है कि सामग्री तो शिक्षक को स्वयं विकसित करनी चाहिए/स्वयं ही बनानी चाहिए। अगर सामग्री वह स्वयं बनाएगा तभी उसका उपयोग होगा। पर साथ–साथ यह भी है कि उसके पास समय कहां है, हर शिक्षक में इतना कौशल, धैर्य व इच्छा कहां है? यानी दोनों तरफ से ही मुश्किल है।

एक प्रश्न जिस पर विचार करना जरूरी लगता है वह है सामग्री कैसी हो, उसे कौन बनाए और वह स्कूल तक कैसे पहुंचे? यह प्रश्न इसलिए महत्वपूर्ण है क्योंकि अकसर बहुत सारा समय व सोच इस पर लगाना पड़ता है। यह सोचा जाता है कि सामग्री तो शिक्षक को स्वयं

विकसित करनी चाहिए/स्वयं ही बनानी चाहिए। अगर सामग्री वह स्वयं बनाएगा तभी उसका उपयोग होगा। पर साथ–साथ यह भी है कि उसके पास समय कहां है, हर शिक्षक में इतना कौशल, धैर्य व इच्छा कहां है? यानी दोनों तरफ से ही मुश्किल है। इस मसले को हल करने में मदद तभी मिलेगी यदि हम यह सोचें कि शिक्षक स्वयं बनाई सामग्री का ज्यादा उपयोग क्यों करेगा।

बहुत से लोग जो सामग्री का उपयोग करते हैं वह उसे बना नहीं सकते और जो लोग अच्छी सामग्री बना सकते हैं, बच्चों के साथ उसका प्रयोग नहीं कर सकते।

इसका एक कारण तो यह है कि शायद वह अपनी कला और अपनी मेहनत को प्रदर्शित करना चाहता है। यदि यह कारण है तो सोचना होगा कि इसका सीखने से क्या सम्बन्ध है। दूसरा कारण यह हो सकता है कि शिक्षक जो सामग्री स्वयं बनाता है उसे अच्छे से समझता है। इस बात को अगर मानें तो यह अपेक्षा होगी कि हर सामग्री शिक्षक ही सोचें और बनाए तभी वह उसका अधिकतम व सही उपयोग कर पाएगा। कई जगह इस पर बहुत ज़ोर भी दिया जाता है। मेरा मानना है कि अच्छी पाठ्यसामग्री बनाना तथा पूरी योग्यता के साथ उसका इस्तेमाल करना दोनों बातें मेल नहीं खाती। बहुत से लोग जो सामग्री का उपयोग करते हैं वह उसे बना नहीं सकते और जो लोग अच्छी सामग्री बना सकते हैं, बच्चों के साथ उसका प्रयोग नहीं कर सकते।

यहां सामग्री का उपयोग हम दो चीजों के लिए कर रहे हैं। एक उपयोग है पाठ्य पुस्तक व कार्यपुस्तिका के रूप में और दूसरा है टी.एल.एम. कहलाई जाने वाली सामग्री के रूप में। इस सामग्री में बहुत सी चीज़ें आती हैं। बने हुए कार्ड, पोस्टर, बने–बनाए उपकरण जिनसे प्रयोग हो सके, क्रिया कलाप के लिए विशेष तौर पर निर्मित सामग्री आदि। अकसर यह भी प्रश्न होता है कि बच्चों को कुछ भी अभिक्रिया कैसे करवाएं सामग्री तो है ही नहीं। फर हम इन्तज़ार करते हैं टी.एल.एम. का और उसके उपयोग करने के तरीके का। और जब सामग्री उपलब्ध हो जाती है तब क्रियाकलाप करवाते समय यह भी नहीं सोच पाते कि और क्या करना है और क्यों करना है। क्या यही टी.एल.एम. का उपयोग है? क्या कक्षा टी.एल.एम. आधारित होनी चाहिए? क्या सिर्फ यह पता होना कि किसी टी.एल.एम. से क्या हो सकता है यही तय कर देगा कि हमें कक्षा में क्या करना है?

यह तो शायद सभी कहेंगे कि इन सवालों का उत्तर नहीं में है। तो फिर टी.एल.एम. किसलिए? इसका जवाब देने से पहले हमें इस सवाल के बारे में सोचना पड़ेगा कि हम बच्चे को क्या सिखाना चाहते हैं। यदि हम यह अच्छे से समझते हैं और यह भी मानते है कि सीख पाने के लिए बच्चे का क्रियाशील होना जरूरी है तो हम कई तरीके ढूंढ़ सकते हैं बच्चों के लिए सीखने के मौके बनाने के। जैसे अगर हमें बच्चों को वस्तुओं के समूह बनाने का अभ्यास करवाना है तो कोई भी सामग्री इकट्ठी की जा सकती है। उससे अलग–अलग स्तर के अभ्यास बनाए जा सकते हैं, जैसे कुछ गुणों के आधार पर बच्चों से उन गुणों की वस्तु छंटवाना या फिर बच्चे स्वयं उन गुणों को सोचें व सोचे गये गुणों के आधार पर वस्तुओं के अलग–अलग समूह बनाएं। यदि हम बच्चों में संख्या की समझ विकसित करना चाहते हैं और हम यह अच्छी तरह जानते हैं कि संख्या की समझ विकसित करने के चरण क्या–क्या हैं तो कोई भी वस्तुएं हों वे यह करवाने में हमारी मदद कर सकती हैं। इसी तरह अधिकांश अवधारणाओं के बारे में हम आस–पास उपलब्ध सरल सामग्री के उपयोग से बच्चों को सोचने व करने में शामिल कर सकते हैं।

तो फिर टी.एल.एम. किसलिए? इसका जवाब देने से पहले हमें इस सवाल के बारे में सोचना पड़ेगा कि हम बच्चे को क्या सिखाना चाहते हैं। यदि हम यह अच्छे से समझते हैं और यह भी मानते है कि सीख पाने के लिए बच्चे का क्रियाशील होना जरूरी है तो हम कई तरीके ढूंढ सकते हैं बच्चों के लिए सीखने के मौके बनाने के।

अब जरा इसके विपरित प्रश्न पर विचार करें। यदि आपके पास एक पासा है तो उससे क्या–क्या अभ्यास हो सकते हैं। एक तो बच्चे आस–पास से कंकड इकट्ठे कर के जितने बिन्दु पासे पर आए (अथवा जो संख्या ऊपर आई) उतने कंकड़ उठा सकते हैं। फिर दो चालों में, तीन चालों में या और ज्यादा चालों में कुल कितने कंकड आए, यह जांच सकते हैं। अगर खेल टोली में खेला जा रहा है तो यह देख सकते हैं कि किस बच्चे के पास ज्यादा कंकड़ आए और कितने ज्यादा। या किस बच्चे के पास सबसे कम कंकड़ आए और कितने कम .... इसी तरह और भी। पासा बार–बार फैंक कर यह भी देख सकते हैं कि कौन सी संख्या कितनी बार आई और किस क्रम में आई।

पासे को कागज पर रख–रख कर यह हिसाब लगा सकते हैं कि कागज का क्षेत्रफल कितने पासों के बराबर है। पासों से बच्चे और भी बहुत कुछ कर सकते हैं। इसे आप चाहें तो जांच सकते हैं कि बच्चे एक गेंद की मदद से किस–किस अवधारणा का अभ्यास कर सकते हैं। अगर आपके पास अक्षर, शब्द अथवा चित्र कार्ड हैं तो इनमें से किसी भी एक को ले कर अनेकों रोचक व सीखने में मददगार गतिविधियां सोची जा सकती हैं, सामान्य गतिविधियों के अलावा। कुल मिला के बात इतनी है कि टी.एल.एम. तभी फायदेमंद है जब उपयोग करने वाले को यह समझ हो कि बच्चों को क्या सीखाना है, उसे सिखाने के क्या चरण हैं और उसके लिए क्या–क्या गतिविधियां बन सकती हैं जिन्हें बच्चे कर सकते हैं। यह हो जाए तो आस–पास से उपलब्ध सामग्री ढूंढ़ना मुश्किल नहीं है।

हृदय कांत दीवान, विद्या भवन सोसायटी, फतेहपुरा, मोहनसिंह मेहता मार्ग, उदयपुर।

अर्थपूर्ण शिक्षा बनाम बुनियादी शिक्षा

चन्द्रशेखर भारती

शिक्षा एक ऐसा पहलू रहा है जो सबसे महत्वपूर्ण होते हुए भी नज़रन्दाज किया जाता रहा क्योंकि इस पर किए गए व्यय या मेहनत के परिणाम तुरन्त प्राप्त नहीं होते। अतः अन्य आवश्यक कार्य आ जाने पर आने वाले 'कल' के लिए छोड़ दिया जाता है। यही वजह रही कि भारत की सम्पूर्ण साक्षरता के लिए तय किए 10 वर्ष आज 60 वर्ष तक भी सम्पूर्ण साक्षरता उपलब्ध नहीं करा पाए जबकि आज चालीस के दशक की तुलना में संचार की सुविधाएं कई गुणा बेहतर हैं।

राष्ट्र के नीति निर्देशक तत्व शिक्षा नीति तय करने में सहायक होते हैं। और उन्हीं के अनुरूप तय शिक्षा का नवीन ढांचा तय किया गया। लार्ड मैकाले की शिक्षा पद्धति की आलोचनाएं जी भर के की (व आज भी कर रहे हैं)। तात्कालीन तय शिक्षा के ढांचे के अनुसार भारत की बुनियाद को

सुदृढ़ करने के लिये बुनियादी शिक्षा आरम्भ की गई जिसके अनुसार क्षेत्र विशेष में प्रचलित उद्योग या व्यवसाय को ही शिक्षा का आधार बनाने की बात कही गई व आशा की गई कि पूरा शिक्षा विभाग बुनियादी शिक्षा के माध्यम से शिक्षा प्रदान कर समूचे भारत को अपने साथ जोड़ लेगा। कृषक बेहतर तरीके से उन्नत कृषि करना सीखेंगे और पशु पालक बेहतर तरीके से पशुपालन। इसी प्रकार अलग–अलग क्षेत्रों में प्रचलित अलग–अलग व्यवसायों की उन्नति भी होगी। अध्ययन करने वाले छात्र को उसके मूल पारिवारिक व्यवसाय से अलग नहीं किया जाएगा तथा शिक्षा पूरी करने के बाद वह कुशल उत्पादक होगा। इसे सर्टिफिकेट या उपाधि का इंतजार कर किसी नौकरी के लिए बेरोजगारों की पंक्ति में खड़ा नहीं होना पड़ेगा। किन्तु ऐसा नहीं हुआ। शायद इसकी वजह यह रही कि हमारे खून में गुलामी के बीज पैर जमा चुके थे। हम कोल्हू के बैल की तरह तब तक नहीं चलना चाहते थे जब तक कि कोई लाठी लिए हमारे पीछे खड़ा हो। बैल तो पशु होता है। उसे पता नहीं होता कि उसे चलाने के लिए बैठे किसान का भार उसे ही वहन करना है। यदि वह खुद चलता रहे तो किसान कोई और काम भी कर सकता है तथा उसे भी कम परिश्रम करना पड़ता...।

... कहते हैं कि जागे तभी सवेरा! क्या यह सवेरा आज हो रहा है? काश यह सवेरा आज और अभी हो। आज हमारे पास शिक्षा का बहुत अच्छा नेटवर्क है। 1989 से पूर्व शिक्षकों के प्रशिक्षण के लिए कोई माकूल व्यवस्था नहीं थी। आज हर जिले में शिक्षण प्रशिक्षण संस्थान स्थापित हैं।

पर हम बैल से अधिक नहीं सोच पाए और बुनियादी शिक्षा का जो हश्र हुआ उससे गांधी को बड़े दुःखी मन से कहना पड़ा कि ऐसी बुनियादी शिक्षा के विद्यालयों को बन्द कर देना बेहतर है...। शायद तात्कालीन शिक्षकों छात्रों व अभिभावकों को भी इसी का इंतज़ार था क्योंकि कहीं से भी बुनियादी शिक्षा को बन्द करने पर विरोध के स्वर सुनाई नहीं दिए। यदि स्वर उभरे भी होंगे तो उनकी ध्वनि अतिमन्द या नक्कार खाने में तूती की तरह रही होगी।

फिर तो एक के बाद एक कई आयोग बने। सबने शिक्षा को व्यवसाय से जोड़े रखने की बात तो कही पर हम हमारे हाथों को मिट्टी, औज़ार व मेहनत से दूर रखने में ही भलाई समझते रहे। शिक्षा से वंचित पढ़े–लिखे समाज के लोगों ने बेकारों को शिक्षा से दूर रखने में ही वे अपनी भलाई समझने लगे। सरकार के हाथ पैसा आया उसने पानी की तरह बहाना शुरू किया पर शिक्षा की स्थिति हमारे सबके सामने है।

... कहते हैं कि जागे तभी सवेरा! क्या यह सवेरा आज हो रहा है? काश यह सवेरा आज और अभी हो। आज हमारे पास शिक्षा का बहुत अच्छा नेटवर्क है। 1989 से पूर्व शिक्षकों के प्रशिक्षण के लिए कोई माकूल व्यवस्था नहीं थी। आज हर जिले में शिक्षण प्रशिक्षण संस्थान स्थापित हैं। वे चाहते हैं कि शिक्षक बताएं उनको किस प्रकार की अकादमिक मुश्किलें है जिसे वो हल करें। खेद है कि उनको आवंटित बजट को आधा भी काम में नहीं ले पा रहे हैं।

प्रशिक्षणों को जहां और प्रभावी बनाना आवश्यक है साथ ही विद्यालयों में अपेक्षित शिक्षकों की संख्या भी होनी चाहिए। जानबूझकर प्रशिक्षणों से बचने वाले शिक्षकों तथा कार्य मुक्त न करने वाले संस्था प्रधानों की जवाबदारी तय की जाए। प्रशिक्षण अवधि का यात्रा भत्ता तुरन्त शिक्षकों को चुकाया जाए। यदि ये कदम उठाए जाते हैं तो शिक्षण प्रशिक्षण की वर्तमान प्रक्रिया को सुधारा जा सकता है।

...आज शिक्षा में सुधार के लिए डाइट्स के अतिरिक्त कई गैर सरकारी अर्ध सरकारी, 'एन.जी.ओ.' स्वयंसेवी संगठन आदि भी तत्पर हैं। सभी अपने–अपने तरीके से शिक्षा के क्षेत्र में कार्य कर रहे हैं। उपलब्धी होने पर खुद श्रेय ले लेते हैं खुश हो जाते हैं तथा लक्ष्य में सफल न होने पर कारण किसी अन्य कारक को बता देते हैं। समग्र शिक्षण व्यवस्था चार कदम चलकर जहां की तहां रह जाती है।

आज जरूरत है सब लोग, संस्थाएं इस दिशा में मिलकर कार्य करें व एक लक्ष्य तय करें।

हाथ से कार्य करने की महत्ता को न कभी नकारा गया न भविष्य में नकारे जाने की सम्भावना कहीं दिखाई पड़ती है। ऐसे में हमें चाहिए कि शिक्षा को कार्य से अलग करके नहीं देखें। शिक्षा में सार्थक व्यावसायिक शिक्षा श्रम का समावेश हो।

आज निश्चित रूप से गांधी जी द्वारा सुझाई बुनियादी शिक्षा को ठीक उसी प्रकार लागू नहीं किया जा सकता क्योंकि हमारे सामाजिक आर्थिक ढांचे में काफी बदलाव आया है किन्तु बुनियादी शिक्षा का जो मूल स्वरूप (विचार) है वह आज और भी प्रासंगिक हो गया है।

आज निश्चित रूप से गांधी जी द्वारा सुझाई बुनियादी शिक्षा को ठीक उसी प्रकार लागू नहीं किया जा सकता क्योंकि हमारे सामाजिक आर्थिक ढांचे में काफी बदलाव आया है। बुनियादी शिक्षा का जो मूल स्वरूप (विचार) है वह आज और भी प्रासंगिक हो गया है। कार्य क्षेत्रों का विस्तार होने से सभी व्यवसायों से जोड़ना कठिन अवश्य जान पड़ता है परन्तु तकनीकी विकास के चलते यह असंभव नहीं। आज आवश्यकता है शिक्षा के क्षेत्र में सभी लोग (प्रशासनिक व अकादमिक) एक साथ मिलें, एक लक्ष्य तय करें व एक कार्य योजना बनाएं। सब स्वयं जिम्मेदारी तय करें व उसे पूरा करें। हम सब नींद से जागें, प्रशासनिक अमला हटाया तो नहीं जा सकता पर कम अवश्य किया जा सकता है तथा उसे भी कुछ न कुछ स्वयं की जिम्मेदारी वाला कार्य सौंपा जाए क्योंकि कार्य करने से होता है सिर्फ कहने से नहीं। हालांकि कई बार कार्य स्वयं करना आसान होता है बनिस्बत दूसरों से करवाने के ...। हम सब लोग अपना–अपना कार्य करें तो निश्चित ही कार्य करने वाले हाथों की संख्या बढ़ेगी तथा हम एक बेहतर, उन्नत, विकसित भारत दे सकेंगे। भारत का एक बहुत बड़ा तबका इस हेतु हमारी और आस लगाए हैं...। हमें उन्हें निराश नहीं करना हैं आएं, आगे बढ़ें अपने क्षुद्र स्वार्थों को छोड़ सब हाथ से हाथ मिला किसी एक लक्ष्य की और बढ़ें। हर व्यक्ति और अधिक आत्मनिर्भर बने।

चन्द्रशेखर भारती, प्राध्यापक, जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, उदयपुर

शिक्षा के वास्तविक लक्ष्य बुनियादी तालीम में समाए हैं

सुशील कुमार जैन

बुनियादी शिक्षा, नई तालीम आदि भूले–बिसरे जुमले लगते हैं। भौतिक, आर्थिक एवं भूमण्डलीकरण के इस युग में जहां कंप्यूटर पर एक क्लिक मात्र से विश्व के किसी भी कोने की थाह ली जा सकती है, ऐसे माहौल में नई पीढ़ी द्वारा गांधीवादी दृष्टिकोण का बिसराना लाज़मी है। कंप्यूटर एवं सेटेलाइट के जंजाल से स्थानों व मानवों के मध्य भौतिक दूरियां जरूर कम हुई हैं लेकिन सूचनाओं से आप्लावित इस धरा पर मानव–मानव के बीच मानवीय दूरियां कम नहीं हुई हैं। विकसित राष्ट्र हों चाहे विकासशील वहां के शिक्षार्थियों द्वारा बंदूकों एवं अन्य आयुधों का इस्तेमाल करना एवं हिंसक–प्रवृत्तियों में लिप्त होना, पता नहीं विश्व को किस रहा पर ले जाएगा? हमारे देश के समूचे शिक्षा तंत्र पर दृष्टिपात करें तो यकीनन इसने बुद्धि पक्ष के विकास हेतु पूर्ण प्रयास किए लेकिन मानवीय पक्ष के विकास में जरूर पिछड़ापन रहा है। महात्मा गांधी द्वारा प्रस्तुत शिक्षा प्रणाली ने जहां सार्वभौमिक विकास को महत्ता प्रदान की वहीं शिक्षार्थी के एकाकी विकास का पूरा ध्यान रखा गया।

कंप्यूटर एवं सेटेलाइट के जंजाल से स्थानों व मानवों के मध्य भौतिक दूरियां जरूर कम हुई हैं लेकिन सूचनाओं से आप्लावित इस धरा पर मानव–मानव के बीच मानवीय दूरियां कम नहीं हुई हैं।

आजादी की अलसमोर से 21 वीं शताब्दी के प्रथम दशक के समापन की ओर अग्रसर हम आज तक हर हाथ को काम और हर मुंह को निवाला प्रदान करने में असमर्थ रहे हैं। शिक्षा प्रणाली में नित नूतन परिवर्तन प्रायोगिक तौर पर किए जाते रहे हैं लेकिन अभी तक शिक्षा के वास्तवित लक्ष्य से हम कोसों दूर खड़े प्रतीत होते हैं।

भारी–भरकम किताबों को महज़ 365 दिन के सत्र में पढ़कर (रटकर) वर्षान्त (सत्रान्त) में 3 घंटों की परीक्षा में जुगाली किए गए शब्दों को लिखित रूप से उगल देना, उस उगलन को परीक्षक द्वारा मात्र 3 मिनट में मूल्यांकित कर छात्र को उपाधि प्रदान करना, हर 365 दिन पश्चात् कक्षावार ऊंची पायदान पर बढ़ोतरी– यह है हमारी शिक्षा। विज्ञान स्नातक को घर का बिजली का फ्यूज़ लगाना न आए, कृषि विज्ञान के स्नातक का फसलों व भूमि का व्यावहारिक ज्ञान न हो तो यह हमारी शिक्षा, शिक्षा प्रणाली एवं तंत्र को कठघरे में खड़ा करता है।

उपर्युक्त ज्वलन्त मुद्दों के निराकरण हेतु शिक्षकों को प्रशिक्षित करने वाली संस्थाओं के द्वारा जो शिक्षक प्रशिक्षित किए जा रहे हैं उनमें डाइट्स की

भूमिका बड़ी महत्वपूर्ण है। डाइट्स नैतिक शिक्षा बुनियादी शिक्षा, नई तालीम के प्रचार–प्रसार में महत्ती भूमिका निभाएं। इसके लिए निम्नांकित प्रावधान तय किए जाने चाहिए–

- बुनियादी शिक्षा के प्रचार–प्रसार में सभी डाइट्स समन्वयक की भूमिका के रूप में स्थापित की जाए।
- डाइट्स को समस्त संसाधनों (यथा भौतिक, मानवीय) से यथाशीघ्र परिपूर्ण किया जाए।
- शैक्षिक प्रौद्योगिकी एवं कार्यानुभव प्रभाग को जोड़ा जाकर बुनियादी शिक्षा की स्थापना के प्रयास हो।
- डाइट्स एवं शिक्षक प्रशिक्षण संस्थाओं में तैयार हो रही नई शिक्षक पौध में हाथ से हुनर के विकास हेतु प्रावधान रखे जाएं।
- हर प्रशिक्षणार्थी किसी भी एक सृजनात्मक विधा में अतिरिक्त दक्षता हासिल करें जो कि नियमित शिक्षक बनने पर शिक्षार्थियों में इस कला में दक्ष करने का प्रयास करें।
- डाइट्स में आयोजित होने वाले विभिन्न सेवारत प्रशिक्षणों में शिक्षकीय कौशल अभिवृद्धि के साथ–साथ हस्तकला के प्रशिक्षण भी रखे जाएं।
- डाइट्स के कार्यानुभव प्रभाग को सक्षम बनाया जाकर उस प्रभाग की विशिष्ट महत्ता को स्वीकारा जाए।
- उद्योग शिक्षा, कला शिक्षा आदि को पुनर्जीवित किया जाना चाहिए।

सुशील कुमार जैन, उपप्रधानाचार्य, जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान गढ़ी, जिला बांसवाड़ा (राज.)

शिक्षा ऐसी हो कि बच्चे हाथों से सृजन कर सकें

ललित किशोरी भट्ट

बुनियादी शिक्षा महात्मा गांधी के शैक्षिक दर्शन पर आधारित है। गांधी जी के शब्दों में '' शिक्षा से मेरा मतलब है बच्चे की समस्त शारीरिक, मानसिक और आत्मिक शक्तियों का सर्वतोन्मुखी विकास।'' अक्षर ज्ञान न तो शिक्षा का आरम्भ है और न अंतिम लक्ष्य। ''सा विद्या या विमुक्तये'' शिक्षा का लक्ष्य है अर्थात् विद्या अथवा शिक्षा द्वारा व्यक्ति को आत्मानुभूति (Self realization) होना आवश्यक है।

विद्यार्थी या मनुष्य की यह आत्मानुभूति का विकास तभी संभव हो सकता है जब उसे स्वतन्त्र रूप से कार्य करने व सोच–विचार करने के अधिकतम अवसर प्रदान किए जाएं। भूल या त्रुटि होने पर प्रताड़ित व दण्ड के स्थान पर उसे भूल सुधार के अवसर दिए जाएं।

बुनियादी शिक्षा के पाठ्यक्रम में उद्योग को केन्द्रिय विषय इसीलिए माना गया है कि इसमें अनेक शैक्षिक सम्भावनाएं निहित है। उद्योग से समवाय कर अन्य विषयों का ज्ञान देने पर बल दिया गया है। किन्तु बाद में उद्योग के अतिरिक्त विद्यार्थी के प्राकृतिक एवं सामाजिक वातावरण से अन्य विषयों

का समवाय किया जाना स्वीकार किया है। केन्द्रिय विषय समवाय करने के अतिरिक्त विद्यार्थी को 'करके सीखने' (Learing by doing) तथा वैज्ञानिक आधार पर वस्तुओं एवं प्रक्रियाओं के क्यों और कैसे? पक्षों को समझने के अवसर देता है।

मातृभाषा के माध्यम से बालक में लिखित एवं मौखिक अभिव्यक्ति की क्षमता विकसित होती है। उसकी सामाजिक कार्यकुशलता बढ़ाने की दृष्टि से भी यह सर्वथा उचित है। सामाजिक अध्ययन द्वारा बालक मानव की प्रगति, देश की सभ्यता व संस्कृति तथा अपने प्राकृतिक एवं सामाजिक वातावरण को समझने एवं उसमें अपना योगदान करने की प्ररेणा प्राप्त करता है। गणित द्वारा बालक अपने उद्योग, घर व समुदाय से सम्बद्ध गणितीय समस्याओं का समाधान खोजने के योग्य बनता है।

सामान्य विज्ञान, प्रकृति अध्ययन, प्रयोग द्वारा अनुभव प्राप्त करने तथा मानव जीवन में शिक्षा की उपयोगिता समझने के अवसर प्रदान करता है।

ये सबकी सब बातें शिक्षा की नीतियों में लिखी तो होती है मगर इनको अपनाया नहीं जा रहा है। बुनियादी शिक्षा उद्योग या क्रियाकलाप केन्द्रित शिक्षा है। यह शिक्षण विधि मनोवैज्ञानिक सिद्धान्तों पर आधारित है क्योंकि उसमें क्रिया द्वारा सीखने के सिद्धान्त निहित हैं। तथा समाज शास्त्रीय दृष्टि से भी उपयुक्त हैं क्योंकि वह बालकों में श्रम के महत्व, समाज सेवा की अभिव्यक्ति, वैज्ञानिक दृष्टिकोण तथा उत्पादक कार्य द्वारा स्वावलम्बन की प्रवृति विकसित करती है।

बुनियादी शिक्षा शैक्षिक दृष्टि से अत्यन्त सुविचारित उपयुक्त योजना है, भारत की आर्थिक स्थिति को देखते हुए प्राथमिक शिक्षा को सार्वजनिक बनाने में सहायक सिद्ध हो सकती थी क्योंकि इसमें स्वावलम्बन

का सिद्धान्त निहित था, किन्तु इस योजना का क्रियान्वयन गलत ढंग से किया गया। जिसके कारण यह अलोकप्रिय हो गई।

बुनियादी शिक्षा के इस रूप को देखकर योजना के प्रणेता डा. जाकिर हुसैन को भी कहना पड़ा था कि बेसिक शिक्षा जो राज्य सरकारें चला रही है, एक धोखा है।

कोई भी शिक्षा प्रणाली तभी सफल हो सकती है जबकि उसमें नए प्रयोग व शोध होते रहें और नई परिस्थितियों का समावेश करके उसमें परिवर्तन किए जाते रहें।

ललित किशोरी भट्ट, व्याख्याता, जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, डूंगरपुर

शिक्षा और बालक के अधिकार

जयश्री द्विवेदी

राष्ट्र का विकास शिक्षा से हो सकता है। इस सच्चाई से कोई आंखें नहीं मूंद सकता। लेकिन इसके लिए शिक्षा का सशक्त होना जरूरी है। शिक्षा तभी सशक्त होगी तब इसका आधार दृढ़ हो। आधार का अर्थ है पहली से पांचवी कक्षा की नींव मजबूत करना।

शिक्षा प्राप्त करना प्रत्येक बच्चे का मूलभूत अधिकार है।

शिक्षा का अभिप्राय

1. बच्चों को बच्चों के रूप में रहने का अधिकार

विद्यालय में जाने, वहां ठहरकर कार्य करने और सीखने का बालकों को अधिकार है। खेल–खेल में शिक्षा प्राप्त करना, आनन्द प्राप्त करना और बाल श्रम के शोषण से बचाना ही शिक्षा का अभिप्राय है।

उन्हें यह भी अधिकार है कि वे घर व परिवार में रहें, शिक्षा के लिए नजदीक विद्यालय में जा सकें और ऐसे शिक्षक का सानिध्य पा सकें जो शिक्षण में रूचि लेता हो। साथ ही बालक उस शिक्षक से ऐसी शिक्षा प्राप्त कर सके जिसमें वह रूचि लेता हो। वह शिक्षा जो बालकों को उनके भावी जीवन के लिए तैयार कर सके, साथ ही आनन्ददायक बचपन को भी सुनिश्चित कर सके।

2. विद्यालय में विद्यालय के बाहर शिक्षा प्राप्त करने का अधिकार

इन अधिकारों में निम्न बातें समाहित हैं, शंका–समाधान करना, सोचना, तर्क करना, झिझक दूर करना, कल्पना करना, सृजन करना, स्वाभाविक रूप से विचारों को बनाए रखने, चुनौतियों का सामना करने तथा प्रत्येक छोटी से छोटी उपलब्धि पर पुरस्कृत होने का भी अधिकार है।

3. अनवरत शिक्षा प्राप्त करने का अधिकार

शिक्षा जन्म से मृत्यु तक चलने वाली प्रक्रिया है। अतः यह आवश्यक है कि बच्चे के जीवन की शुरूआत से ही शिक्षा मिले। यह शैशव का वह अधिकार है जो भावी विकास के बीजों का रोपण करता है। व्यक्तित्व और ज्ञान दोनों की आधारशीला प्रारंभिक वर्षों में रखी जाती है और वह वही महत्वपूर्ण समय है जब बालक के संज्ञानात्मक व असंज्ञानात्मक दोनों ही क्षेत्रों में विकास होता हैं।

4. विद्यालय जाने और वहां आवश्यकतानुसार ठहरने का अधिकार

विद्यालय में बालक ऐसे कौशलों की जानकारी लेता है जो बालक के भविष्य निर्माण में सहायक होते हैं। शारीरिक स्वास्थ्य की जानकारी इस समय बच्चा विद्यालय से प्राप्त करता है। भारतीय संस्कृति के मूलाधार की शिक्षा, मौखिक व लिखित अभिव्यक्ति के रूप में स्वयं को अभिव्यक्त करना, दैनिक जीवन की समस्याओं को हल करना, पर्यावरण की रक्षा करना, पर्यावरण की रक्षा करना, गणना करना या सीखने की प्रक्रिया को निरन्तर चालू रखना, आदि बालक के मूल अधिकार हैं।

5. शिक्षा का अधिकार

बच्चों की आयु व वर्ग के अनुसार पाठ्यक्रम, शिक्षण विधियां, भवन एवं स्थान शिक्षा हेतु प्राप्त हो।

6. सीखने का अधिकार

विद्यालय में तथा विद्यालय के बाहर बालकों को शैक्षिक अधिकार देकर उनका पूर्ण विकास कर तथा उनकी क्षमताओं का विकास किया जा सके।

अपने समुदाय से न केवल निःशुल्क विद्यालयों, प्रशिक्षत अध्यापकों, प्रासंगिक पाठ्यक्रमों तथा आवश्यक शिक्षण सामग्री की मांग करें बल्कि अपरिहार्य आर्थिक, सामाजिक और प्रभावी स्थितियों में सृजन के लिए भी कहें। जैसे– स्वास्थ्य की देखभाल, पोषाहार, उचित आवास की व्यवस्था और छात्रों को उचित मात्रा में प्यार व दुलार।

7. श्रेष्ठ व प्रासंगिक शिक्षा का अधिकार

यह शिक्षा उस दिशा को बताती है जिसमें 'कितना सीखा जाए' की जगह इस बात पर जोर देती है कि क्या सीखा जाए और कैसे सीखा जाए?

बच्चे को ऐसी शिक्षा प्राप्त करने का अधिकार है जो पूर्वाग्रहों से मुक्त हो।

ज्ञान और काम करने की योग्यता को रेखांकित करती हो। अर्थात् बच्चा क्या नहीं जानता और क्या नहीं कर सकता। इसका बोध कर सके।

8. खुली (मुक्त शिक्षा) शिक्षा का अधिकार

बालक चाहे घर में हो चाहे विद्यालय में उसे इस बात का अधिकार है कि वह खेलों द्वारा मित्रों के साथ अन्तःक्रियाओं द्वारा और संचार के संधानों द्वारा शिक्षण प्राप्त कर सकें। संग्राहलयों, बगीचे, खेल के मैदान, चिड़ियाघर, सर्कस, समाचार पत्रों, बाल पत्रिकाओं, परियों की कहानियों, शब्दकोष, कार्टून चित्रों, विडियो फिल्मों तक बालक की पहुंच का होना, केवल पुस्तकों से ही नहीं अपितु लोगों और प्रकृति के साथ वास्तविक संवाद करते हुए सीखे।

9. शिक्षा में अभिभावकों से सहयोग प्राप्त करने का अधिकार

अभिभावक मिल जो उनके जीवन में सहयोग कर सकें। बच्चों को मिलने वाले अधिकारों की सही जानकारी अभिभावकों को होनी चाहिए।

जो बालकों की सीखने की प्रक्रिया में अच्छे बुरे की परख कर सकें, विद्यालय की बैठकों में हमेशा भाग लें व सकारात्मक रूख रखें।

बच्चों को आगे बढ़ने, व शिक्षा प्राप्त करने एवं विकास करने में उनको मददगार सिद्ध हो सकें।

10. शिक्षा के लिए उचित संचार के साधनों की सुविधा का अधिकार

बालकों को ऐसे माध्यम चाहिए जो उनकी शिक्षा में पूरक हों और उसे समृद्ध करने में सक्षम हों। ग्रामीण बच्चों को शहर से सम्पर्क व शहरी बच्चों को खेत–खलियानों के सम्पर्क में ला सके।

शिक्षा एक सार्वभौमिक अधिकार है। यही सभी बच्चों की मदद करती है। बालकों और बालिकाओं की जातिगत, अल्पसंख्यकों की, परिवार में रहने वाली तथा गलियों में वास करने वालों की एक शरणार्थी के रूप में रहने वाले बच्चों की, सबकी मददगार होनी चाहिए।

जयश्री द्विवेदी, व्याख्याता, जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, डूंगरपुर

रपट-1

उदयपुर संभाग की डाइट्स में बुनियादी शिक्षा के मूल तत्त्वों को स्थापित करने के लिए

डाइट्स के साथ संवाद

के. आर. शर्मा

उदयपुर संभाग की डाइट्स में बुनियादी शिक्षा के विचारों को स्थापित करने के लिए हमने संपर्क किया। उल्लेखनीय है कि डाइट्स के संकाय सदस्यों के लिए 30 एवं 31 अगस्त 2007 को विद्या भवन आईएएसई संस्थान में एक कार्यशाला का आयोजन किया था। कार्यशाला में हमने डाइट्स के संकाय सदस्यों के साथ सार्थक संवाद स्थापित करने का प्रयास किया था।

डाइट– उदयपुर

दिनांक 26 नवम्बर 07 को हमने उदयपुर डाइट की प्राचार्या श्रीमती कृष्णा चौहान के साथ हमारी बैठक हुई। इस बैठक में उप प्राचार्य और कार्यानुभव के व्याख्याता श्री चन्द्रशेखर भारती भी शामिल हुए। डाइट में विद्या भवन द्वारा गांधी के शिक्षा के विचारों को अपनाने की दिशा में किए जा रहे प्रयासों के कार्यों के बारे में बातचीत की गई। चर्चा में प्राचार्या ने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि डाइट इस कार्य को आगे बढ़ाने में क्या और कैसे मदद कर सकती है? इस काम में अपनी रूचि प्रकट करते हुए उन्होंने कहा कि यद्यपि उनके यहां पर स्टॉफ की कमी है फिर भी वे गांधी शिक्षा विचारों को अपनाने के लिए उनकी जिले की शालाओं के शिक्षकों के प्रशिक्षण कार्यक्रम में इसे शामिल करना चाहेंगे।

यह तय किया गया कि उनके यहां के संकाय के सदस्यों के साथ इस मसले पर चर्चा बैठक रखी जाए तथा संकाय के सदस्यों को पठन सामग्री दी जाए। डाइट के वाचनालय में बुनियादी शिक्षा से संबंधित सामग्री उपलब्ध कराई जाए ताकि यहां के सदस्य और छात्र, शिक्षक इस मसले से रूबरू हो सके। ।

हम बुनियादी शिक्षा को लेकर प्रकाशित सामग्री अपने साथ लेकर गए थे वह सारी सामग्री प्राचार्य और अन्य साथियों को प्रदान की गई। वाचनालय में भी सामग्री रखी गई, ताकि इसका उपयोग यहां आने वाले शिक्षक आदि कर सकें।

बुनियादी शिक्षा के प्रमुख बिंदुओं के बारे में चर्चा की गई। चर्चा में प्रमुख बात यह रही कि जब हम बेहतर शिक्षा की बात करते हैं तो हमें बुनियादी शिक्षा में ही इसका जवाब मिलता है। प्राचार्या ने कहा कि हम इन सब बातों से सहमत हैं। हाल ही में जो एनसीएफ की अनुशंसाएं आई हैं उनमें भी इन सब बातों का उल्लेख किया गया है। प्राचार्या ने कहा कि उनके यहां कार्यानुभव के तहत शिक्षकों को प्रशिक्षित किया जाता है। लेकिन यह सब कुछ पाठ्यक्रम से जुड़ नहीं पाता है। श्री चन्द्रशेखर भारती ने बताया कि वे कार्यानुभव के तहत शिक्षकों के साथ प्रशिक्षण करते हैं। बुनियादी शिक्षा की प्रक्रिया को और कैसे प्रभावशाली बनाया जा सकता है, इस पर विचार किया गया।

बुनियादी शिक्षा के विचार को डाइट के माध्यम से व्यापीकरण करने की दिशा में सुझाव देते हुए

प्राचार्या ने कहा कि पूर्व सेवाकालीन छात्रों के साथ एक चर्चा का आयोजन किया जाए। इसमें संस्थान के संकाय सदस्य भी शामिल हो सकेंगे। इसके लिए दिनांक 14 दिसंबर 2007 को उदयपुर डाइट में एक कार्यशाला रखना तय किया गया।

डाइट– गढ़ी, जिला– बांसवाड़ा

डाइट गढ़ी में दिनांक 3–11–07 को एक बैठक का आयोजन किया गया। इस बैठक में बुनियादी शिक्षा की मूल बातों को डाइट संस्थान में अपनाने पर चर्चाएं की गई। डाइट संकाय की सदस्य श्रीमती उपाध्याय जो कि कभी कस्तूरबा गांधी संस्थान इंदौर से संबद्व रही हैं ने बताया कि वह बुनियादी शिक्षा एवं गांधी के विचारों पर काफी कुछ स्वाध्याय करती रही हैं। उन्होंने हिंद स्वराज भी पढ़ा है। अतः इस बैठक में चर्चाएं काफी गंभीरता के साथ हो सकी। अपरान्ह के बाद गढ़ी डाइट में पूर्व सेवाकालीन छात्रों के लिए आधे दिन की कार्यशाला की गई। इस कार्यशाला में लगभग 75 छात्र एवं संकाय सदस्य उपस्थित थे।

चर्चा की शुरूआत इस बात से की गई कि वर्तमान शिक्षा में कुछ खामियां हैं। इन खामियों को दूर करने के लिए क्या किया जाए? जब भी हम बेहतर शिक्षा की बात करते हैं तो इसका हल हमको बुनियादी शिक्षा में ही दिखाई देता है। यही कारण है कि शिक्षा की नीतियों में बुनियादी शिक्षा के तत्वों का समावेश किया जाता रहा है। संस्थान के उप प्राचार्या जैन ने इस बात पर जोर दिया कि हाल में जो एनसीएफ आया है उसमें भी बुनियादी शिक्षा के तत्त्वों को शामिल किया गया है। इस दस्तावेज में काम केंद्रित शिक्षा को शामिल किया गया है। यह तो साफ है कि वर्तमान शिक्षा बच्चों को अपने जीवन से नहीं जोड़ पाती है। जो शिक्षा दी जाती है वह रटने को बाध्य करती है। यह शिक्षा बच्चों के शारीरिक और मानसिक विकास में अवरोध पैदा करती है।

कार्यशाला में यह बात भी उभरकर आई कि गांधी ने जिस शिक्षा की बात की थी उस पर उन्होंने काफी प्रयोग किए थे। हिंद स्वराज के बारे में चर्चा की गई। गांधी ने हिंद स्वराज में शिक्षा को लेकर जो विचार प्रस्तुत किए हैं उनकी आज के संदर्भ में प्रासंगिकता है। चर्चा सत्र के बाद पूर्व सेवाकालीन छात्रों के द्वारा सवाल भी किए गए। उन पर भी चर्चा हुई।

डाइट के संकाय सदस्यों के साथ जो चर्चा हुई उसमें यह सहमति बनी कि बुनियादी शिक्षा के विचारों को ध्यान में रखकर हम कैसे अपनी कार्य योजना बना सकते हैं। आगे कैसे काम को आगे बढ़ा सकते हैं। इस बारे में डाइट के संकाय सदस्य विचार करेंगे।

डाइट– नाथद्वारा, जिला– राजसमन्द

नाथद्वारा डाइट में दिनांक 29 नवम्बर 2007 को सेवारत शिक्षकों, सेवा पूर्व छात्राध्यापकों व संकाय सदस्यों के लिए आधे दिन की कार्यशाला की गई। कार्यशाला में की गई चर्चा के दौरान संस्था के प्राचार्य श्री दाहिया ने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि हमने बुनियादी शिक्षा को भले ही भूला दिया हो लेकिन इसकी प्रासंगिकता आज भी बरकरार है। उन्होंने बताया कि आज से 20–25 साल पहले सरकारी स्कूलो में हाथों से काम करने के लिए वर्कशाप हुआ करती थी। इन वर्कशाप्स की मशीनों पर आज जंग लग रहा है। पहले हर बच्चे को हाथ से काम करना होता था लेकिन अब पढाई किताबी बनकर रह गई है। संस्थान के संकाय सदस्य श्री रतनलाल कुमावत ने कहा कि हम ऐसा क्या करें कि बुनियादी शिक्षा को आज के संदर्भ में अपना सकें। चर्चा में यह विचार उभर कर सामने आया कि डाइट के लोग बुनियादी शिक्षा को उनके संस्थान के लेब एरिया की स्कूलों में लागू करना देखना चाहते हैं। संस्थान के लेब एरिया में लगभग

16 स्कूलें हैं। इनमें हम किस प्रकार से बुनियादी शिक्षा को लागू करें। डाइट के संकाय सदस्यों ने बताया कि इन स्कूलों के प्रधान अध्यापक और शिक्षकों के साथ उनकी नियमित बैठकें होती रहती हैं। हमें यह जरूरी लगता है कि इन स्कूलों में बुनियादी शिक्षा के मूल तत्त्वों को स्थापित करें। एक सुझाव आया कि क्यों न इन स्कूलों के प्रधानाध्यापकों के साथ हम एक चर्चा बैठक या कार्यशाला का आयोजन करें। चर्चा के अंत में यह तय किया गया कि दिनांक 5 दिसंबर 2007 को लेब एरिया रापचा में प्रधानाध्ययापकों की एक कार्यशाला का आयोजन किया जाए। श्री दाहिया और उनके संकाय सदस्यों ने सुझाव रखा कि बुनियादी शिक्षा के विचारों को डाइट में स्थापित करने के लिए डाइट स्तर पर एक प्रकोष्ठ बनाया जाए। इस प्रकोष्ठ में शैक्षिक सलाहकार के रूप में विद्या भवन सोसायटी उदयपुर मदद करें। इस संबंध में आगे विचार करने की जरूरत है।

डाइट– डूंगरपुर, जिला– डूंगरपुर

दिनांक 26 दिसम्बर 07 को बुनियादी शिक्षा के संदर्भ में डूंगरपूर डाइट में एक चर्चा बैठक रखी गई। इस बैठक में डाइट प्राचार्या श्रीमती आभा मेहता ने राय प्रकट करते हुए कहा कि बुनियादी शिक्षा के विचारों से संस्थान के संकाय सदस्यों और पूर्व सेवाकालीन छात्रों को परिचित कराया जाए ताकि भविष्य में इस पर काम करने के लिए एक योजना बनाई जा सके।

प्राचार्य ने कहा कि इस बात की जरूरत है कि हम बच्चों को हाथों से काम करने के लिए प्रेरित करें। लेकिन स्कूल में बच्चों को इसके मौके उपलब्ध नहीं हो पाते हैं। इस प्रकार की शैक्षणिक सामग्री का अभाव भी दिखाई देता है। उन्होंने कहा कि सर्व शिक्षा अभियान के तहत इस प्रकार के प्रशिक्षण का आयोजन भी होता है लेकिन हाथों से काम करने के प्रभावशाली माड्यूल हमारे पास नहीं है।

प्राचार्य के साथ चर्चा के बाद डाइट के पूर्व सेवाकालीन छात्रों के साथ भी एक बैठक रखी गई। इस चर्चा में प्रमुख रूप से यह बात उभर कर आई कि वर्तमान शिक्षा समझ की शिक्षा देने में असमर्थ है। शिक्षा का मतलब यही है कि सीखना। लेकिन सीखने की प्रक्रियाएं कक्षाओं में अपनी जगह नहीं ले पा रही है।

डाइट– माउंट आबू, जिला–सिरोही

दिनांक 22 जनवरी, 2008 को माउंट आबू डाइट में सराय सदस्यों और पूर्व सेवाकालीन छात्रों के साथ बुनियादी शिक्षा को वर्तमान परिप्रेक्ष्य में अपनाने की बातचीत हुई।

चर्चा के प्रमुख बिंदू ये रहे कि हम गांधी को भारत की आज़ादी दिलाने के संदर्भ में जानते हैं। वर्तमान पीढ़ी इस बात से वाकिफ नहीं है कि गांधी ने शिक्षा गुणात्मक बदलाव करने के लिए एक ठोस योजना हमें सौंपी थी। नई तालीम या बुनियादी शिक्षा के बारे में हम भले ही न जानते हों मगर इसके आयामों को हम जरूर अपनाना चाहते हैं। पूर्व सेवाकालीन छात्रों को इस बात का अहसास बना कि जिस नई तालीम को आज भुला दिया गया है उसमें गुणात्मक शिक्षा की जड़ें जमी हुई है। छात्रों से चर्चा में यह बात उभर कर आई कि सही शिक्षा के सारे गुण नई तालीम में समाए हैं। वर्तमान शिक्षा व्यवस्था में बच्चों को रटना पड़ता हैं, उनको हाथों से काम करने के अवसर नहीं मिलते हैं उनके परिवेश का समावेश नहीं है। डाइट के प्राचार्य श्री पुरोहित ने अपने अनुभव बताए कि बुनियादी शिक्षा के तहत उन्होंने खुद ने शिक्षा पाई है। विद्यार्थी जीवन में उन्होंने उद्योग के माध्यम से शिक्षा पाई है। प्राचार्य श्री पुरोहित चाहते है कि बुनियादी शिक्षा के आयामों को आज के संदर्भ में अपनाया जाए।

के. आर. शर्मा, बुनियादी शिक्षा : एक नई कोशिश की संपादन प्रक्रिया में संलग्न।

रपट-2

एक बैठक प्रधान अध्यापकों के साथ

स्थान – राजकीय माध्यमिक विद्यालय रापचा, जिला–राजसमंद

दिनांक 5 दिसंबर 2007 को नाथद्वारा डाइट के तहत चुनी गई लेब एरिया की स्कूलों के प्रधान अध्यापकों के साथ बुनियादी शिक्षा को लेकर एक बैठक का आयोजन किया गया। इस बैठक में नाथद्वारा डाइट के प्राचार्य श्री दाहिया और संकाय सदस्य मौजूद थे। बैठक में रापचा के आसपास के लगभग 15 स्कूलों के प्रधान अध्यापक उपस्थित हुए थे। बैठक की शुरूआत परिचय से हुई। इसके पश्चात चर्चा प्रारंभ हुई।

चर्चा की शुरूआत वर्तमान शिक्षा व्यवस्था कीं खामियों से हुई। जो बातें निकलकर आई वो ये कि शिक्षा जीवन से जुड़ी हुई नही है। इस शिक्षा व्यवस्था की वजह से शिक्षक, पालक और बच्चे सभी परेशान हैं। बच्चों को रटने को बाध्य होना पड़ता है। परीक्षा के कारण हर कोई परेशान हैं। और सबसे बड़ी दिक्कत यह है कि बच्चों को सीखने के मौके नहीं मिल पाते हैं। शिक्षकों की ओर से यह भी कहा गया कि बच्चों ने क्या सीखा इससे किसी को मतलब नहीं है। मतलब इस बात से है कि बच्चे पास हुए या नहीं। शिक्षकों के सिर पर तलवार लटकी होती है कि उन्होंने कोर्स पूरा करवाया या नहीं। कुल मिलाकर समस्याएं ही समस्याएं!

सवाल इस बात का है कि शिक्षा की इन समस्याओं का हल कैसे मिले? बेहतर शिक्षा से हम क्या समझते हैं? किसे हम बेहतर शिक्षा मान लें?

चर्चा में निम्न बातें उभरकर आई –

- बेहतर शिक्षा का मतलब यह कि बच्चों को सीखने के अवसर मिले।
- बेहतर शिक्षा यानेकि बच्चों को हाथों से कुछ काम करने को मिले।
- बेहतर शिक्षा का मतलब यह कि शिक्षा अपने परिवेश से जुड़े।
- बेहतर शिक्षा का मतलब यह कि बच्चों में आत्मविश्वास के भाव पैदा हो।
- बेहतर शिक्षा यानेकि बच्चों पर परीक्षा का बोझ न हो।

यदि ऐसी शिक्षा की रचना करनी है तो क्या करें? हम कैसे आगे बढ़ें?

इस मसले पर विमर्श हुआ कि इन समस्याओं का हल हमको बुनियादी शिक्षा में दिखाई देता है। बुनियादी शिक्षा कोई अलग शिक्षा व्यवस्था नहीं है। इसके उद्देश्य इस प्रकार हैं–

- बुनियादी शिक्षा जीवन की शिक्षा की बात करती है।
- इसमें बच्चों को हाथों से काम करने के मौके उपलब्ध होते हैं। बच्चों को हाथ से ऐसे काम करने के अवसर दिए जाएं जो सृजनशीलता को बढ़ावा दें। और काम के माध्यम से ज्ञान का अर्जन हो।

- बच्चों को गतिविधि आधारित शिक्षा दी जाए।
- बच्चों को ऐसे उदाहरणों के माध्यम से शिक्षा दी जाए जो कि उनके आसपास के हों।
- शिक्षा में प्रतिद्वंद्विता न हो।

जब हम इन बातों को शिक्षा में शामिल करेंगे तो बच्चों में आत्मविश्वास पनपेगा।

वर्तमान शिक्षा व्यवस्था में जो पाठ्यक्रम है वह जानकारी आधारित है। पाठ्यक्रम में नित नई जानकारियां डाली जा रही है। मगर बच्चों में कौशलों का विकास नहीं हो रहा है। इतना ही नहीं इस प्रकार के प्रयास शिक्षक प्रशिक्षणों में नही किए जाते। पूरी शिक्षा व्यवस्था परीक्षा के इर्द–गिर्द ही घूमती है। बच्चों ने क्या सीखा इसका कोई हिसाब–किताब नहीं होता!

इन चर्चाओं के साथ ही यह तय किया गया कि अगली बैठक में हम कुछ अवधारणाओं को बुनियादी शिक्षा के मापदंडों पर शिक्षण का हिस्सा बनाने की दिशा में चर्चा करेंगे।

प्रधानाध्यापकों ने यह भी मंशा जाहिर की कि टीएलएम के नाम पर प्रति स्कूल 500 रु. की राशि शिक्षा विभाग की ओर से भुगतान की जाती है। हम टीएलएम के लिए क्या साधन सामग्री रचें? इसको लेकर यदि कोई संदर्भ सामग्री हो तो उपलब्ध कराएं। चर्चा के अंत में प्रधानाध्यापकों ने मंशा व्यक्त करते हुए कहा कि उनको स्कूल में बच्चों और शिक्षकों के लिए पुस्तकों की जरूरत है। यदि उन्हें बेहतर पुस्तकों के बारे में जानकारी मिल जाए तो वे अपने स्कूल के लिए उन्हें खरीदना चाहेंगे।

रपट-3

डाइट्स में बुनियादी शिक्षा केन्द्रित प्रकोष्ठ

बुनियादी शिक्षा के विचारों को शैक्षिक जगत के साथ बांटने और उनके मतों को जानकर आज के संदर्भ में अपनाने का सतत प्रयास विद्या भवन की ओर से किया जा रहा है।

विद्या भवन की ओर से डाइट्स के साथ विमर्श किया। डाइट्स ने मामले की गंभीरता को समझते हुए इस विचार को अपनाने की पैरवी की है। डाइट राजसंमद और उदयपुर से प्रस्ताव तैयार किए हैं कि वे अपने यहां बुनियादी शिक्षा के आयामों को स्थापित करने के लिए एक प्रकोष्ठ का गठन करना चाहते हैं। प्रस्ताव इस प्रकार है–

इस प्रकोष्ठ में शैक्षिक मार्गदर्शन विद्या भवन सोसायटी, उदयपुर द्वारा किया जाएगा। उल्लेखनीय है कि विद्या भवन सोसायटी विगत 75 वर्षों से मेवाड़ क्षेत्र में शिक्षा को बेहतर बनाने की दिशा में एवं समाज को शैक्षिक रूप से उन्नयन करने के लिए सक्रिय रूप से कार्यरत हैं। विद्या भवन सोसायटी की ओर से गांधी के शिक्षा दर्शन को अपनी शालाओं में अपनाने पर जोर दिया जा रहा है। विद्या भवन सोसायटी की एक शाला में गांधी के विचारों के अनुरूप शिक्षा पद्धति को आजादी के पूर्व से ही अपनाया जा रहा है। गांधी के शिक्षा दर्शन की प्रमुख बातों में काम के माध्यम से ज्ञान दिया जाए, शिक्षा को स्थानीय परिवेश से जोड़ा जाए। बच्चों में आत्मविश्वास पैदा हो और वे जिम्मेदार नागरिक बने।

गांधी के शिक्षा दर्शन की इन बातों को अन्य संस्थाएं भी अपनाएं, इसके प्रयास भी विद्या भवन सोसायटी की ओर से किए जा रहे हैं। समय–समय पर गांधी के विचारों पर विद्या भवन सोसायटी की ओर से प्रकाशित सामग्री उपलब्ध कराई जाती रही है। डाइट उदयपुर में विद्या भवन सोसायटी की ओर से अब तक गांधी के शिक्षा दर्शन पर चर्चाएं हुई हैं। इन विचारों को जानने पर प्रतीत होता है कि यदि शिक्षा में गुणात्मक रूप से बदलाव करने की दिशा में कार्य करना है तो इनको अपनाने की जरूरत है।

एनसीईआरटी द्वारा विद्यालयीन शिक्षा को बेहतर बनाने के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या–2005 में भी गांधी के शिक्षा दर्शन (बुनियादी शिक्षा) के मूल तत्वों को प्रमुखता दी गई है। इस दस्तावेज में गांधी के शिक्षा

के मूल तत्त्वों को गुणात्मक शिक्षा के लिए अपनाने की पहल की गई है।

उपरोक्त समस्त बातों को दृष्टिगत रखते हुए डाइट में प्रकोष्ठ का गठन किया जा रहा है। इस प्रकोष्ठ में शैक्षिक मार्गदर्शन विद्या भवन सोसायटी, उदयपुर की ओर से किया जाएगा।

उद्देश्य :

1. यह प्रकोष्ठ डाइट के अंतर्गत विद्यालयीन गतिविधियों में गुणात्मक सुधार में सहयोग प्रदान करेगा।
2. बालकों और शिक्षकों में सृजनशीलता को विकसित करने की दिशा में प्रयास करेगा।
3. प्रकोष्ठ शिक्षक प्रशिक्षणों में कौशल विकास, सृजनात्मक विकास, सामुदायिक गतिशीलता, सामाजिक दायित्व, नैतिक एवं चारित्रिक मूल्यों का विकास करने में महत्ती भूमिका अदा करेगा।
4. प्रकोष्ठ के माध्यम से बेहतर विषयगत शिक्षण सामग्री तैयार कर संबंधित शालाओं में उपलब्ध कराने का प्रयास किया जाएगा।
5. प्रकोष्ठ के माध्यम से डाइट के संकाय सदस्यों और जिले के प्रशिक्षकों के साथ बेहतर शिक्षा को स्थापित करने के लिए संवाद स्थापित करने के प्रयास किए जाएंगे।
6. प्रकोष्ठ के माध्यम से उपरोक्त बिंदुओं पर आवश्यकतानुसार शोध कार्य भी करने का प्रयास किया जाएगा।
7. प्राथमिक एवं उच्च प्राथमिक शालाओं को कार्यात्मक शिक्षा की ओर अग्रसर करने का प्रयास किया जाएगा।
8. पाठ्यपुस्तकों में दी गई अवधारणाओं को समझने के लिए प्रयोग, गतिविधियां आदि के अवसर उपलब्ध कराए जाएंगे।
9. पाठ्यक्रम को स्थानीय परिवेश से जोड़ने का प्रयास किया जाएगा।
10. प्रकोष्ठ के माध्यम से डाइट के लेब एरिया की प्राथमिक एवं उच्च प्राथमिक शालाओं में उपरोक्त उद्देश्यों की पूर्ति के लिए सघन प्रयास किए जाएंगे।

रपट-4

एक यात्रा बुनियादी स्कूल की

दीप्ति शर्मा

गोगुंदा विकास खंड के शिक्षकों का एक प्रशिक्षण डाइट उदयपुर में दिनांक 28 से 31 जनवरी 2008 तक आयोजित किया गया। प्रशिक्षण में हम शिक्षकों को हाथों से बनाने एवं सिखाने का लक्ष्य रखा गया। चूंकि विद्या भवन सोसायटी की स्कूल में बुनियादी शिक्षा के तहत हाथों से रचने का कौशल प्रदान किया जाता है अतः यह तय किया गया कि एक दिन हम सभी प्रशिक्षणार्थी वहां जाकर देखें। सभी प्रशिक्षणार्थियों ने ठीक 10.30 बजे विद्या भवन बुनियादी माध्यमिक विद्यालय रामगिरि में अपनी उपस्थिति दी। डाइट से श्री चन्द्रशेखर जी भारती हमारे प्रशिक्षण प्रभारी थे।

सर्वप्रथम विद्यालय की प्रधानाध्यापिका ने सभी प्रशिक्षणार्थियों का विद्यालय में स्वागत किया। तथा विद्यालय की स्थापना के पीछे जुड़े उद्देश्यों से तथा गांधी के विचारों को उनका विद्यालय किस प्रकार मूर्तरूप दे रहा है इससे अवगत कराया। तत्पश्चात विद्यालय में संचालित सभी इकाइयों का अवलोकन कराया। सर्वप्रथम सिलाई प्रशिक्षण विभाग का अवलोकन कराया। यहां बालकों को सिलाई–कटाई का प्रशिक्षण दिया जा रहा है तथा उनके बनाए कपड़ों की बिक्री की जाती है। इसके बाद फ्रुड प्रोसेसिंग यूनिट का अवलोकन प्रशिक्षणार्थियों ने किया। यहां बालकों द्वारा फलों से मिश्रित विभिन्न उत्पादों को प्रशिक्षणार्थियों को दिखाया। इन उत्पादों की भी बिक्री की जाती है तथा इस प्रक्रिया के दौरान बालक–बालिकाएं हाथों से काम करने का अभ्यास करते हैं और इसमें जो विज्ञान है उसको सीखते हैं। इसके बाद सभी ने इलेक्ट्रिक, कंप्यूटर, विज्ञान प्रयोगशाला आदि का अवलोकन किया। इसके बाद सभी ने हेंडमेड पेपर यूनिट में पेपर निर्माण की पूरी प्रक्रिया देखी। तथा उसी पेपर से निर्मित विभिन्न वस्तुओं जैसे डायरी, फोल्डर्स तथा कार्ड्स आदि को देखा तथा उनको बहुत पसन्द किया। अंत में सुथारी कक्ष का अवलोकन किया जिसमें बच्चों द्वारा बनाई गई चीज़ों को सभी ने सराहा। तत्पश्चात विद्यालय स्टॉफ का धन्यवाद ज्ञापित कर सभी ने वहां से प्रस्थान किया। हमारी अगली मंजिल विद्या भवन सोसायटी थी जहां शिक्षा कैसी हो? बुनियादी शिक्षा की प्रासंगिकता पर विमर्श हुआ। कैसे गांधी के विचारों को शिक्षा में समाहित किया जा सकता है आदि मसलों के बारे में बताया। इसके अलावा सभी ने पिटारा कक्ष का भी अवलोकन किया जहां बहुत सी अच्छी किताबें देखने का मौका मिला।

लंच ब्रेक के बाद सभी प्रशिक्षणार्थी वन भ्रमण के लिए गए जहां अरावली पर्वत माला में पाए जाने वाले विभिन्न औषधीय पौधों के गुण और प्रकृति से सभी प्रशिक्षणार्थियों को अवगत कराया जिसमें अकरकरा, भृंगराज, भूमि आंवला, अमलतास, खेजड़ी, जल जननी आदि मुख्य थे।

दीप्ति शर्मा, राजकीय उ.प्रा. विद्यालय, जोगियों का गुड़ा, तहसील गोगुन्दा, उदयपुर

रपट-5

गांधीवादी शिक्षा अध्ययन केन्द्र

भाग चन्द्र कुमावत

गांधीवादी शिक्षा दर्शन को अमल में लाने के प्रयोजन में 1941 में विद्या भवन मदरसे की स्थापना की थी। विद्या भवन के द्वारा इस मदरसे के माध्यम से बुनियादी तालीम के तत्त्वों और उसके सिद्धांतों को स्कूली पाठ्यक्रम में शामिल कर उन्हें मूर्तरूप देने के लिए प्रयास किए गए। देश की आज़ादी के बाद इस तरह के व्यापक प्रयास देश के कई हिस्सों में किए गए थे। किन्तु अन्य कारणों या बाधाओं के चलते मुख्य रूप से लोगों में गांधीवादी शिक्षा विचार की अस्पष्ट समझ अर्थात् उसे ठीक से नहीं समझ पाने के कारण देश में इसका प्रयोग असफल रहा। परिणामस्वरूप गांधी जी की यह महत्वपूर्ण शिक्षा योजना राष्ट्रीय शिक्षा का स्वरूप प्राप्त नहीं कर पाई।

आज भी कुछ हिस्सों में गांधीवादी शिक्षा संस्थानों में अस्पष्ट समझ के साथ, रूढ़ीवादी परिपाटी की तरह बुनियादी तालीम पर काम किया जा रहा है। विद्या भवन ने गांधी जी के बुनियादी शिक्षा विचार की आज के संदर्भ में प्रासंगिकता को देखते हुए इस पर फिर से गहन काम करने और उसे अपनाने की दिशा में विद्या भवन बेसिक स्कूल में प्रयास शुरू किए। विद्या भवन ने बुनियादी शिक्षा को समझने, अपनाने और उसके व्यापीकरण की दिशा में विशेषतौर से पिछले 3–4 वर्षों में जो प्रयास किए, इन प्रयासों में राजस्थान माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, एस.आई.ई.आर.टी., डाईट आदि के साथ काम करते हुए पता चला कि हमारी बुनियादी शिक्षा की समझ अधूरी है। फलस्वरूप इन शिक्षा अभिकरणों को बुनियादी शिक्षा की अहमियत से संतुष्ट नहीं कर पाए और न ही उन्हें अपने विश्वास में ले पाए।

इस शिक्षा विचार की अवधारणा और इसके फैलाव के लिए जूझते हुए हमें यह समझ में आया कि केवल स्कूली स्तर पर प्रयास करने से काम नहीं चलेगा। इस विचार को समग्ररूप से समझने और उस पर काम करने की जरूरत है। असल में जब तक बुनियादी शिक्षा को उद्योग की शिक्षा के रूप में (एकांगी रूप) में देखा जाता रहेगा और समझा जाता रहेगा तब तक गांधीवादी शिक्षा विचार को व्यापक रूप से जमीनी स्तर पर नहीं उतारा जा सकेगा। दूसरी ओर जब तक शिक्षा की पूरी व्यवस्था के साथ इस विचार को नहीं जोड़ा जाएगा तब तक यह विचार आज के शैक्षिक परिदृश्य में केवल एक टापू रूप में ही अवस्थित रहेगा। यदि इस विचार का सर्वव्यापीकरण करना है और इसे राष्ट्रीय शिक्षा व्यवस्था में लाना है तो हमें बुनियादी शिक्षा के सभी महत्वपूर्ण तत्त्वों जैसे, पाठ्यक्रम सामग्री, शिक्षक प्रशिक्षण, काम से ज्ञान का निर्माण (समवाय) आदि जैसा कि इस विचार में निहित है को जब तक समग्र रूप से समझने की कोशिश नहीं की जाएगी तब तक उसका व्यापीकरण संभव नहीं हो सकेगा। दरअसल शिक्षा से वास्ता रखने वाली सभी कड़ियों को इसमें जोड़ना होगा। तभी बुनियादी शिक्षा के व्यापीकरण की दिशा में सार्थक रूप से काम होने की संभावना बन सकेगी।

इन सभी प्रमुख बातों को ध्यान में रखते हुए

हम गांधीवादी शिक्षा विचार को समग्र रूप से समझने और उसके सर्वव्यापीकरण करने के लिए विद्या भवन बेसिक स्कूल को गांधी शिक्षा विचार अध्ययन केन्द्र के रूप में प्रतिस्थापित करना चाहते हैं।

इस अध्ययन केन्द्र में एक वृहद् गांधी पुस्तकालय विकसित किया जाएगा जिसकी सामग्री का विद्यार्थी, शिक्षक एवं शोधकर्ता उपयोग कर सकेंगे। इस केन्द्र के अन्तर्गत एक शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय संचालित किया जाएगा। यह महाविद्यालय गांधीवादी शिक्षा दर्शन के सिद्धान्तों पर काम करेगा। यहां से निकलने वाले प्रशिक्षित शिक्षक बुनियादी तालीम की समझ के साथ शिक्षण कार्य करेंगे। इससे बुनियादी तालीम के दायरे को बढ़ाने में मदद मिलेगी। इसके साथ–साथ बेहतर और गुणात्मकता शिक्षा की तरफ देश के लोगों का ध्यान आकृष्ट किया जाएगा। काम से ज्ञान के निर्माण की अवधारणा को बल मिलेगा। इन वर्षों में बुनियादी तालीम में प्रशिक्षित लगभग 500 शिक्षक तैयार होंगे जो 500 शालाओं में काम करेंगे।

हमारा अब तक 6 डाईट्स उदयपुर, बांसवाड़ा, नाथद्वारा, डूंगरपुर, चित्तौड़गढ और सिरोही से संवाद तो बना है लेकिन इनके साथ बुनियादी शिक्षा के व्यापीकरण की दिशा में कोई ठोस कार्य शुरू नहीं हो पाया। यद्यपि अभी हाल में नाथद्वारा, उदयपुर और बांसवाड़ा डाईट के साथ बुनियादी शिक्षा को अपनाने के संदर्भ में जो चर्चा गोष्ठी और बातचीत की गई उससे काम करने की अब अच्छी संभावना बनी है।

इस संभावना को देखते हुए अगले पांच सालों में डाईट के सहयोग से उनके साथ मिलकर चारों जिलों की प्रारम्भिक शिक्षा के सेवा पूर्व और सेवारत शिक्षकों को काम केन्द्रित शिक्षा के संदर्भ में गहन प्रशिक्षण दिया जाएगा। बेहतर शिक्षा की संकल्पना से उन्हें रूबरू कराया जाएगा। इन पांच वर्षों में बुनियादी तालीम के शिक्षण की कुशलता प्राप्त शिक्षक चारों जिलों की प्रारम्भिक शिक्षा स्कूलों में अध्यापन कार्य करेंगे। इस प्रयास से धीरे–धीरे मुख्यधारा की शिक्षा में बुनियादी शिक्षा के तत्त्वों का समावेश होगा। दूसरी ओर इन डाईट के लेब सीमा के विद्यालयों में शिक्षकों और बच्चों के साथ ऐसी गतिविधियां की जाएगी जिनके मार्फत बुनियादी शिक्षा के आयामों को बल मिले। इससे बुनियादी शिक्षा का प्रचार–प्रसार व विस्तार होगा।

भाग चन्द्र कुमावत, बुनियादी शिक्षा : एक नई कोशिश परियोजना में संलग्न।

सरोकार

सर, गुलाब के फूल क्या होते हैं?

डी.एस. पालीवाल

खेरवाड़ा के कुछ युवाओं ने क्षेत्र की उन्नति के लिए जन आंदोलन के विकास के साथ ही शिक्षा में गुणात्मक विकास के क्रम में दूर–दराज के जनजाति विद्यार्थियों के लिए अध्ययन केन्द्र शुरू किए है। इनके संचालन के लिए एक प्रतिबद्ध साथी की ज़रूरत होती है जो अपने ही घर में बालकों की शैक्षणिक गतिविधियों को अंजाम दे सकें। ऐसे ही कुछ युवा हैं जो बच्चों के नखरे और बहानेबाजी के बावजूद घर–घर से बालकों को केन्द्र पर लाते हैं। वहां बालकों को अपना–अपना काम करने देते है। यहां छोटे बच्चे बड़े बच्चों से पाठ्यक्रम के सवाल पूछते है, बड़े बच्चे भी प्यार और उत्साह से उन्हें समझाते है। जब बड़े बच्चों तथा संचालक को भी हल नहीं मिलता है तो मिलकर माथापच्ची करते हैं तथा शिक्षक को पूछने की भी हिम्मत जुटाने लगे हैं।

इस पुस्तिका को देखने के पश्चात लगता है कि पाठ्य सामग्री तैयार करने वाले निष्णात विद्वानों द्वारा कड़ी मेहनत के पश्चात तैयार की गई पुस्तिकाएं हर प्रकार से उन ठेठ ग्रामीण आदिवासी बच्चों के लिए अनुपयोगी लगती है। इस उदाहरण से यह समझ में आता है कि पाठ्य सामग्री तैयार करने में क्षेत्र विशेष का ध्यान रखना कितना जरूरी है।

एक बार कागदर पंचायत के बांध मार्ग के एक फले में मुझे एक दोस्त के साथ जाने का मौका मिला। जब वहां पहुंचे तब सभी बच्चे अपनी अपनी चिमनी हाथ में पकड़े केन्द्र की तरफ आ रहे थे। उस दिन मैं उन्हें कंप्यूटर दिखाने गया था। पहली बार कंप्यूटर देखकर सभी प्रफुल्लित थे तथा उससे संबंधित और भी जानकारियां पूछ रहे थे। जब सत्र समाप्त हो गया तो मैं गम्भीर होकर अपने कंप्यूटर पर टाईप करने लगा गया। मैं सोच रहा था कि मैं अपने काम में लग जाऊं और बच्चे अपना काम करते रहें।

आठवीं कक्षा की बालिका प्रियंका पिछले वर्ष 75 फीसदी से ज्यादा अंक लाई थी। प्रियंका के पिताजी केन्द्र चलाते है। वे स्वयं निर्माण मजदूर हैं तथा उनकी पत्नी खेतीहर मज़दूर है। मेरा दोस्त बच्चों से धुमाल कर रहा था। उससे प्रियंका ने गुलाब के अर्क तथा गुलाब जल बनाने की विधि पूछी। मेरे दोस्त ने तरह–तरह से समझाया पर प्रियंका संतुष्ट नहीं हुई।

मैंने इस मसले में हस्तक्षेप करने की कोशिश की। मगर बात नहीं बनी। मैंने स्थानीय उदाहरण लेने का विचार किया और पूछा कि 'दारू कैसे बनती है?' सबने बता दिया और एक मटके में महुए से शराब बनाने की आसवन विधि समझ ली। मैंने बताया यह शराब भी अर्क है।

अब गुलाब से अर्क बनाने की बात आई। मैंने बताया कि जिस तरह महुए से शराब बनती है उसी तरह से गुलाब का अर्क बनता है। बच्चे सभी रूचि लेने लगे थे पर वैसा जोश और उत्साह नहीं दिखा। मैं भी सोचता रहा कि कहां गलती हो रही है।

फोटो सौजन्य : जागरूक युवा संगठन

मैंने पुनः शुरूआत की। सबसे पहले बताया कि जैसे महुए का फूल होता है उसी तरह गुलाब का फूल होता है और ...। मगर बात नहीं बनी। मैंने पूछा कि किसी ने गुलाब का फूल देखा है? ...फूलों का राजा...। कांटे वाले पौधे पर लगता है... गुलाबी रंग होता है... उसकी खुशबू आती है ...। किसी ने कोई प्रतिक्रिया नहीं दी। मैं अपने आपको कोस रहा था कि बच्चों को क्यों नहीं समझा पा रहा हूं?

इतने में राजेन्द्र ने बोला 'सर' ये गुलाब का फूल क्या होता है? मैंने पूछा– तुम में से किसी ने गुलाब का फूल देखा है? सभी ने 'ना' कहा। वहां तो हम सिर्फ तीन लोग थे जो शहरों में घूमे हुए थे और गुलाब का फूल देखा था।

मैं मन ही मन सोच रहा था कि इन बच्चों को गुलाब का फूल दिखाना है। मैं खेरवाड़ा में अनेक जगह जाता रहा और पूछता रहा पर साथियों ने अनभिज्ञता ही जताई। बाद में पता चला कि खेरवाड़ा कस्बे के मिशन स्कूल तथा प्रिंसिपल के घर पर गुलाब खिले थे पर वहां आम लोग प्रवेश नहीं कर सकते।

यह माना जा सकता है कि सम्पूर्ण खेरवाड़ा में कहीं भी गुलाब के फूल नहीं है और आठवी कक्षा के प्रत्येक विद्यार्थी को राजस्थान राज्य पाठ्य–पुस्तक मण्डल, जयपुर, की पुस्तक स्वावलम्बन की सीख (कार्यानुभव) को पढ़ाया जाता है। इसमें पाठ–12, अर्क और गुलकन्द के बारे में हैं। इसी तरह के कुल 20 पाठ हैं जिनमें बच्चों को स्वावलम्बन का ज्ञान दिया गया है पर अधिकांश सामग्री पहाड़ी बच्चों के लिए अनुपयोगी है।

इस पुस्तिका को देखने के पश्चात लगता है कि पाठ्य सामग्री तैयार करने वाले निष्णात विद्वानों द्वारा कड़ी मेहनत के पश्चात तैयार की गई पुस्तिकाएं हर प्रकार से उन ठेठ ग्रामीण आदिवासी बच्चों के लिए अनुपयोगी लगती है। इस उदाहरण से यह समझ में आता है कि पाठ्य सामग्री तैयार करने में क्षेत्र विशेष का ध्यान रखना कितना जरूरी है।

मैं गुलाब के फूल खोजते हुए वन विभाग की नर्सरी में गया तो ज्ञात हुआ कि सैकड़ों 'कलमें' तैयार हो रही है। शायद, रोपा जाएगा गुलाब तथा शहरी और कस्बाई लोगों के घरों और कार्यालयों की क्यारियों में खिलेंगे। कुछ गांव तक भी पहुंचेंगे या नहीं, कुछ कहा नहीं जा सकता। क्या कभी शिक्षाविद् क्षेत्र के आधार पर मातृभाषा एवं स्थानीय संसाधनों पर आधारित पाठ्यक्रम तैयार करेंगे और स्वावलम्बी शिक्षा दे सकेंगे?

डी.एस. पालीवाल, जनजाति क्षेत्रों में शिक्षा और सामाजिक मसलों पर कार्यरत। उदयपुर में रहते हैं।

लीक से हटकर

पुस्तकें पढ़ें, आगे बढ़ें

वि.वि. सिंह

विद्यार्थी स्वयं पढ़ने में रुचि लें और पाठ्यपुस्तकों के अलावा अन्य पुस्तकें अधिकाधिक पढ़ें तो यह कई दृष्टियों से अत्यन्त उपयोगी होता है। जानकारी में वृद्धि के अतिरिक्त बच्चों का शब्द भण्डार बढ़ता है, उनकी लेखन क्षमता का विकास होता है और एक ऐसी आदत बनती है, जो जीवनपर्यन्त उनके लिए लाभप्रद होती है। इस तरह की रुचि बच्चों में प्राथमिक स्तर पर विकसित की जाए, तो बेहतर होगा। इस संबंध में विद्या भवन जूनियर स्कूल में कुछ प्रयोग किए जिनके बारे में चर्चा करना यहां प्रासंगिक होगा।

कक्षा 3–5 के लिए समय सारिणी में पुस्तकालय हेतु कोई कालांश निर्धारित नही था। सर्वप्रथम स्टाफ मीटिंग में निर्णय लेकर हम लोगों ने समय चक्र में सप्ताह में एक कालांश बढ़ा लिया जिसे शनिवार को समायोजित किया गया। अब सभी कक्षाओं के समय चक्र में सोमवार से शनिवार के मध्य एक–एक कालांश पुस्तकालय हेतु निर्धारित किया गया। एक शिक्षिका को, जिन्होंने इस कार्य में विशेष रुचि ली, यह काम सौंपा गया। उन शिक्षिका ने जूनियर स्कूल में पूर्व में उपलब्ध पुस्तकों को

जमाया। साथ ही सीनियर स्कूल पुस्तकालय में जाकर बड़े श्रम से कक्षा 5 तक के बच्चों के स्तर की पुस्तकें छांटी। पुस्तकालयाध्यक्ष के सहयोग से वे सभी पुस्तकें जूनियर स्कूल में स्थानान्तरित कर दी गई।

पुस्तकालय कालांश में एक कक्षा के सभी बच्चे पुस्तकालय में जाने लगे। अल्मारियां खुली होतीं, बच्चें उन्हें देखते और अपनी मर्जी से एक पुस्तक इश्यू करवाते। अध्यापिका एक बच्चे द्वारा ली गई पुस्तक का नाम, बच्चे का नाम आदि लिखतीं, उस दौरान बाकी बच्चे बैठकर पत्रिकाएं पढ़ते। अब आवश्यकता महसूस हुई कि बाल पत्रिकाओं की संख्या बढ़ाई जाए, कम से कम 30–35 हों जिससे प्रत्येक बच्चे को एक समय में एक पत्रिका मिल सके। पत्रिकाओं के अतिरिक्त चित्रकथाएं रखी गईं जिनको पढ़ने में बच्चे विशेष रुचि लेते। बच्चों को एक सप्ताह के लिए एक पुस्तक इश्यू होती। पत्रिकाएं और चित्र कथाएं इश्यू नहीं की जाती, उन्हें वहीं बैठ कर पढ़ना होता था। अगले चरण में कक्षा पुस्तकालय की व्यवस्था की गई। प्रत्येक कक्षा–कक्ष में एक नकूचे वाली डेस्क इस हेतु प्रयुक्त की गई। 40–50 पत्रिकाएं (जिनमें पुराने अंक भी सम्मिलित थे) व चित्र कथाएं रखी गई। प्रत्येक कक्षा में एक बच्चे को यह जिम्मेदारी सौंपी गई कि वह खाली समय में बच्चों को पत्रिकाएं व चित्र कथाएं बांट दे और अगले कालांश की घण्टी बजने पर सब बच्चे अपने आप आकर जमा कराएं जिससे काम जल्दी हो जाए। प्रत्येक कक्षा के लीडर को एक–एक ताला भी दिलवाया गया।

धीरे–धीरे बच्चों की रुचि बढ़ने लगी। कोई 2–4 बच्चे, पढ़ने में रुचि न लेकर शैतानी करते तो दूसरे बच्चों को नागवार गुज़रता। जल्दी ही ऐसी स्थिति भी आई कि लीडर के अनुपस्थित रहने पर बच्चे प्रधानाध्यापिका के पास पहुंच गए कि आज हमें पत्रिकाएं नहीं मिल पाई। स्टाफ से चर्चा करके इस समस्या का हल ऐसे निकाला गया कि एक के बजाय दो लीडर बना दिए गए और ताले की दूसरी चाबी उसके पास रहती जिससे इस व्यवस्था में व्यवधान न आए।

पुस्तकालय कालांश में एक कक्षा के सभी बच्चे पुस्तकालय में जाने लगे। अल्मारियां खुली होतीं, बच्चें उन्हें देखते और अपनी मर्जी से एक पुस्तक इश्यू करवाते। अध्यापिका एक बच्चे द्वारा ली गई पुस्तक का नाम, बच्चे का नाम आदि लिखतीं, उस दौरान बाकी बच्चे बैठकर पत्रिकाएं पढ़ते।

पत्रिकाओं की संख्या बढ़ाने में मदद ऐसे मिली कि एक पत्रिका के विज्ञापन में पढ़ा कि पिछले तमाम अंक आधी कीमत में मंगवाए जा सकते हैं। आधी कीमत में उपलब्ध पत्रिकाओं के 7 सेट मंगा लिए गए। अब कक्षा पुस्तकालय अच्छे खासे समृद्ध हो गए।

उस सत्र के अंत में यह पता लगाने की भी कोशिश की गई कि कितनी पत्रिकाएं या चित्र कथाएं प्रत्येक कक्षा में कम हुई हैं। 7 कक्षाओं में से 3 में एक भी कम नहीं निकली, एक–दो में नगण्य सी संख्या थी। सबसे अधिक एक कक्षा में 13 पुस्तकें कम पाई गईं। इनका गायब होना हमारे लिए चिन्ता का विषय था। इस कक्षा में छात्रावासी विद्यार्थियों की संख्या अधिक थी। थोड़ा बातचीत करने पर ज्ञात हुआ कि बच्चे जब पढ़ते हैं और घण्टी बजने पर कोई कहानी अधूरी रह जाती है तो वे उसे ले जाते हैं। दूसरे दिन वही पत्रिका हाथ आए या न आए, उन्हें संशय रहता है।

चोरी करना उनका इरादा नहीं होता पर वापस लाने का सम्पट नहीं बनता। कुछ छात्रावासी बच्चों ने कुछ पत्रिकाएं लाकर दी कि ये अमुक–अमुक जगह पड़ी हुई थी। बच्चों को समझाया गया। यह बात भी निकलकर आई कि छात्रावास में अपने खाली समय में भी वे पढ़ना चाहते हैं। एक सेट वहां भी रखवा दिया गया। यह संतोष का विषय था कि बच्चे पढ़ने में रुचि लेने लगे थे, किन्तु अभी भी पत्रिकाएं और चित्र कथाएं अधिक पढ़ते थे। पुस्तकें पढ़ने में उनकी रुचि कम दिखाई दी।

थोड़ा बातचीत करने पर ज्ञात हुआ कि बच्चे जब पढ़ते हैं और घण्टी बजने पर कोई कहानी अधूरी रह जाती है तो वे उसे ले जाते हैं। दूसरे दिन वही पत्रिका हाथ आए या न आए, उन्हें संशय रहता है। चोरी करना उनका इरादा नहीं होता पर वापस लाने का सम्पट नहीं बनता।

आगामी सत्र में जो नई पुस्तकें खरीदी गई, प्रभारी अध्यापिका ने उन्हें प्रार्थना सभा के पश्चात् बच्चों को प्रदर्शित किया और अति संक्षेप में उनके बारे में जानकारी भी दी। बाहर निकलते ही कुछ बच्चों ने उन्हें पढ़ने में अपनी रुचि बताई और इश्यू करवाना चाहा। एक प्रयोग और किया गया पुस्तकालय में बड़ी मेज़ व रैक पर पुस्तकों का दो दिन तक प्रदर्शन किया गया और बच्चों से कहा गया कि वे सारी पुस्तकें देख कर अपनी डायरी में वरीयता क्रम में उन पुस्तकों के नाम लिखें, जिन्हें वे पढ़ना चाहते हैं।

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 के अनुसार साहित्य भी बच्चों की रचनाशीलता को बढ़ा सकता है। कोई कहानी, कविता या गीत सुनकर बच्चे भी स्वयं कुछ लिखने की दिशा में प्रवृत्त हो सकते है।

बच्चों की रुचि निरन्तर बढ़ रही थी। दल अध्यापकों ने उनको प्रोत्साहित करने के लिए दल–बैठकों में इस बारे में पूछना शुरू किया कि पिछले दिनों उन्होंने कौन–कौन सी किताबें पढ़ी? उन्हें क्या चीज़ें अच्छी लगी। कौन सी कहानी पसंद आई और क्यों? कभी–कभी बच्चों को उनकी पढ़ी हुई कहानी सुनाने के लिए भी कहा गया।

कक्षा पांच के दोनों वर्गों में चूंकि मैं ही हिन्दी पढ़ाती थीं अतः मैंने बच्चों को इस हेतु प्रोत्साहित किया कि वे एक कॉपी या डायरी 'मेरा संग्रह' नाम से बनाएं और जो कविता, अनमोल वचन या कोई गद्यांश उन्हें बहुत अच्छा लगे उसे उसमें उतार लें, कॉपी के पीछे के पृष्ठ पर पठित पुस्तकों की सूची भी बनाएं। मैंने स्वयं अपना संकलन उन्हें दिखाया। इससे कुछ बच्चे प्रेरित अवश्य हुए, किन्तु सभी ने ऐसा किया यह नहीं कहा जा सकता।

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 के अनुसार – साहित्य भी बच्चों की रचनाशीलता को बढ़ा सकता है। कोई कहानी, कविता या गीत सुनकर बच्चे भी स्वयं कुछ लिखने की दिशा में प्रवृत्त हो सकते हैं।

उनको इसके लिए भी प्रोत्साहित किया जाना चाहिए कि वे अलग–अलग रचनात्मक अभिव्यक्ति के माध्यमों को आपस में मिलाएं।''

शिक्षकों और विद्यार्थियों दोनों को ही इस बात के लिए प्रोत्साहित और प्रशिक्षित करने की ज़रूरत है कि वे पुस्तकालय को अधिगम, आनन्द एवं तन्मयता के साधन के रूप में इस्तेमाल करें। स्कूल पुस्तकालय की संकल्पना एक ऐसे बौद्धिक स्थल के रूप में की जानी चाहिए जहां शिक्षक, विद्यार्थी और निकटस्थ समुदाय के लोग ज्ञान के गहरे अर्थों और कल्पनाशीलता की तलाश में आएं। किताबों के सूचीकरण और अन्य व्यवस्थाओं को वहां इस प्रकार विकसित किया जाना चाहिए कि बच्चे आत्मनिर्भर रूप से पुस्तकालय का उपयोग कर पाएं।

शिक्षकों और विद्यार्थियों दोनों को ही इस बात के लिए प्रोत्साहित और प्रशिक्षित करने की ज़रूरत है कि वह पुस्तकालय को अधिगम, आनन्द एवं तन्मयता के साधन के रूप में इस्तेमाल करें। स्कूल पुस्तकालय की संकल्पना एक ऐसे बौद्धिक स्थल के रूप में की जानी चाहिए जहां शिक्षक, विद्यार्थी और निकटस्थ समुदाय के लोग ज्ञान के गहरे अर्थों और कल्पनाशीलता की तलाश में आएं।

आमतौर पर विद्यालय में सत्रांत से पूर्व नई पुस्तकें खरीदी जाती थीं, हम लोगों ने इसे मध्य सत्र में करने का निर्णय लिया। शहर के बुक स्टोर्स वालों को स्कूल में आकर स्टॉल्स लगाने हेतु आमंत्रित किया गया। बच्चों को यह सूचना दी गई कि वे उन पुस्तकों को देखें और जो पुस्तकें अपने पुस्तकालय में मंगवाना चाहते हैं, उनके नाम कक्षा पुस्तकालय लीडर्स को बता दें। लीडर्स अपनी कक्षा की सूची शिक्षिका प्रभारी तक पहुंचा देंगे। जो बच्चे स्वयं पुस्तकें खरीदना चाहें वे भी वहां पर क्रय कर सकते हैं। कक्षावार विद्यार्थियों ने अपने दल अध्यापक–अध्यापिकाओं के साथ पुस्तक मेले को देखा। कुछ ने पुस्तकें खरीदीं भी। अपनी पसन्द की पुस्तकों के नाम लीडर्स को नोट कराएं और इस तरह पुस्तकों में रुचि बढ़ाने और खरीद में बच्चों की सक्रिय भागीदारी बनाने में हमें सफलता मिलीं।

वि.वि. सिंह, पूर्व प्रधानाध्यापिका, विद्या भवन सोसायटी जूनियर स्कूल। वर्तमान में विद्या भवन सोसायटी में कार्यरत।

ऐसे मनाई ईद

लाल शंकर चौबीसा

जिम्मेदार नागरिकता, समाज में भाईचारे की स्थापना, समानता, बेहतर शिक्षा की स्थापना करना विद्या भवन के उद्देश्यों में शामिल हैं। चाहे मकर संक्रति हो, क्रिसमस या फिर ईद, सभी त्यौहारों को बच्चे और शिक्षक मिल जुलकर स्कूली माहौल में मनाते हैं। विद्या भवन की बुनियादी स्कूल, रामगिरि में ईद मिलन समारोह आयोजित किया गया। प्रस्तुत है इस पर एक संक्षिप्त रपट

कक्षा पांचवी की भाषा की पुस्तक में एक कविता का पाठ है ''त्यौहारों का देश''। इस पाठ को पढ़ाने के साथ ही छात्रों को इससे संबंधित कुछ गतिविधियां भी करवाई जाती हैं। जैसे इस वर्ष गणेश चतुर्थी व रामदेव जयन्ती पर बच्चों से प्रार्थना सभा में ध्यान कराया तथा इनके बारे में बच्चों को बताने को कहा गया। बच्चों ने दोनों के बारे में कई जानकारियां दी। इसी प्रकार ईद के त्यौहार के बारे

में पूछने पर बच्चों ने अधिक जानकारी नहीं दी। इसे संबंध में स्टाफ से चर्चा कर ईद के बारे में अधिक जानकारी देने का कार्यक्रम बनाया तथा विद्यालय में ईद मनाने का निश्चय किया।

पर्व मनाने के लिए बच्चों से नए–नए वस्त्र पहनकर व सिर पर टोपी लगाने को कहा। निश्चित दिन प्रातःकाल विद्यालय का पूरा वातावरण ईदमय दिखाई देने लगा। सारे बच्चे एक दूसरे को ईद की मुबारकबाद देने लगे व गले मिलते रहे। अपने–अपने घरों से अपने अध्यापकों को (ईद के दिन) बधाइयां दी।

पूरे विद्यालय में प्राथमिक कक्षाओं के बच्चे कुछ ज्यादा ही प्रसन्न दिखाई दे रहे थे। इस कार्यक्रम में रोज़ा का महत्व तथा रोज़ा व नमाज़ के बारे में श्रीमती अजब बानू, श्रीमती सलमा हीतावाला तथा श्रीमती शहनाज़ डी. के, ने जानकारी दी।

पर्व मनाने के लिए बच्चों से नए–नए वस्त्र पहनकर व सिर पर टोपी लगाने को कहा। निश्चित दिन प्रातःकाल विद्यालय का पूरा वातावरण ईदमय दिखाई देने लगा।

बताया गया कि ईद को 'ईद–उल–फितर' भी कहा जाता है। ईद का अर्थ है ''खुशी'' और फितर का अर्थ है ''दान''। ईद से पहले लोग एक माह के रोज़े रखते हैं। यह माह प्रार्थना या इबादत के लिए खास होता है। वे दिन भर भूखे रहते हैं। रोज़ा रखने वाले लोग सूरज निकलने से पहले ही कुछ खा–पी सकते हैं। इसका वास्तविक उद्देश्य आत्म–संयम एवं अनुशासन के गुणों का विकास करना है। रमज़ान माह के 29 दिन पूरे हो जाने के बाद चांद देखा जाता है। चांद दिखने पर अगले दिन ईद मनाई जाती है। चांद के दिखाई नहीं पड़ने पर ईद दूसरे दिन मनाई जाती है।

ईद की आमद (आने) का सभी को बेताबी से इंतजार होता है। बच्चों को ईद का सबसे ज्यादा उत्साह रहता है। बच्चों को पहनने को नए कपड़े, खाने को मीठी सेवइयां एवं मिठाई का विशेष आकर्षण होता है।

ईद पर खास नमाज़ पढ़ी जाती है। सभी लोग ईदगाह पर इकट्ठे होकर एक साथ नमाज़ पढ़ते हैं। नमाज़ के बाद सम्पूर्ण मानव जाति की खुशहाली के लिये शुभकामनाएं व दुआएं की जाती हैं।

ईद की नमाज़ के बाद सभी लोग एक–दूसरे के गले मिलकर मुबारकबाद देते हैं। इसमें छोट–बड़े, अमीर–गरीब का कोई भेदभाव नहीं रहता है। उस दिन सभी लोग एक–दूसरे को ईद मुबारक देने उनके घर जाते हैं। इसे ''ईद–मिलन'' कहा जाता है। ईद का मुबारक दिन आपस में खुशियां और बधाइयों के आदान–प्रदान करने का पर्व है। ईद हमें प्रेम व भाईचारे का संदेश देती है।

कार्यक्रम के समापन पर बच्चों को सेवइयों की खीर बांटी गई। लगभग सभी बच्चों के लिए स्कूल में ईद समारोह का पहला अवसर था।

सेवइयों की व्यवस्था विद्यालय के शिक्षकों ने की थी। बच्चों में जाति, सम्प्रदाय आदि की कोई दुर्भावना नहीं होती। बच्चों के कोमल हृदय में सभी का सम्मान करने का गुण होता हैं। इसी गुण को ध्यान में रखते हुए यह त्यौहार मनाया गया। अभिभावकों ने भी इस कार्यक्रम को सफल बनाने में सहयोग दिया।

लाल शंकर चौबीसा, अध्यापक, विद्या भवन बुनियादी माध्यमिक विद्यालय, रामगिरि, उदयपुर

शहनाज़ की डायरी

शिक्षकों को अपनी दैनिक डायरी लिखनी होती है। ज्यादातर मामलों में यह एक कर्मकांड सा होता है। कुछ शिक्षकों की कक्षाएं जीवंत होती हैं मगर वह सब कुछ डायरी में स्थान नहीं ले पाता है।

विद्या भवन बुनियादी माध्यमिक स्कूल, रामगिरि की शिक्षिका श्रीमती शहनाज़ डी.के. से हमने अनुरोध किया कि उनकी कक्षा में जो भी कुछ होता है उसे वे लिख दें। शहनाज़ ने वह सब कुछ लिखा जो उनकी कक्षा में घटता है।

बेहतर शिक्षा, अर्थपूर्ण शिक्षा, बालकेन्द्रित शिक्षा इन सबको समेटकर देखें–समझें तो क्या उसका अहसास शहनाज़ की कक्षा में झलकता है? क्या आप डायरी के अंशों को पढ़कर शहनाज़ की कक्षा को सक्रिय कक्षा की श्रेणी में रखेंगे? एक सक्रिय कक्षा में और क्या–क्या हो सकता है? यदि आप भी इस दिशा में कुछ कर रहे/रही हो तो हमें ज़रूर लिख भेजें। आपसे अनुरोध है कि अपनी कक्षा के अनुभवों को, सीखने–सिखाने के तरीकों को, सीखने–सिखाने में आ रही अड़चनों को लिखें और हमें भेजें।

शहनाज़ ने अपनी डायरी में कक्षा शिक्षण के बारे में जो कुछ भी लिखा उसको हम बिना संपादकीय तोड़ मरोड़ के प्रस्तुत कर रहे हैं।

जब तितली को देखा

3 अगस्त 2007

खेत में आज बच्चों को कीड़े देखने ले गई तो वहां बच्चों को तितली पकड़ने में बहुत मज़ा आ रहा था। तभी एक बच्चा तितली पकड़ कर मेरे पास आया। तितली को देखकर मैं दंग रह गई क्योंकि तितली की रस चूसने की नली को मैंने पहले कभी नहीं देखा था जो आज मैं अपनी नौकरी के 10 साल में पहली बार इतना अच्छी तरह देखा। बच्चे कहने लगे ये तो अभी ही फूल पर बैठी थी इसलिए यह नली बाहर ही निकली दिख रही है। बच्चों ने तितली को देर तक देखा। उसकी ढांगे गिनी। और फिर उसको छोड़ दिया।

जब पकड़ा गुबरैला

10 अगस्त 2007

कल तक हमने कीटों पर काम करने के बाद उनके बारे में आज कुछ पढ़ने की बात चली। अपनी क्लास की लाईब्रेरी में कीटों से संबंधित दो-तीन किताबें ही हैं। इसलिए मैंने खुद ही एक किताब कक्षा तीन में पढ़कर सुनाई जो मकड़ियों के बारे में थी। बच्चों को सुनने में तो मज़ा आया ही परन्तु अगले दिन एक और मज़ेदार बात हुई कि बच्चे एक बड़ा कीट "गुबरैला" पकड़ लाए और उसकी टांगें गिनी तथा उसके शरीर के तीन भाग है यह भी उन्होंने देखा जो कि एक दिन पहले उन्होंने मकड़ी वाली किताब से जाना था। और यह भी पक्का कर लिया कि यह तो कीट ही है।

बच्चों ने बनाए स्केल

20 सितम्बर 2007

आज बच्चे गणित में लंबाई नापने का काम कर रहे थे। कुछ बच्चों के पास स्केल नहीं था। वे एक दूसरों से मांग कर अपना काम कर रहे थे। मैंने अरविंद नामक बच्चे से पूछा तुमने क्या नापा? उसने कहा रबर और शार्पनर की लंबाई। मैंने कहा तुम्हारे पास तो स्केल नहीं है। अरविंद ने कहा- मैंने खुद ने एक स्केल बनाई है। मैंने कहा, दिखाओ। वह कागज़ की एक पट्ठी लेकर आया। मैंने पूछा कैसे बनाया? वह अपने दोस्त की स्केल ले आया और नाप कर बताने लगा कि देखो मैंने इसके जैसे ही निशान अपने कागज़ पर लगाए हैं और इस कागज की स्केल पर वस्तुओं को रख-रख कर नाप रहा हूं। इसके बाद उसने दूसरे बच्चों को कागज़ की पट्ठी से स्केल बनाना सिखवाया। और 15, 20, 25, 35 सेमी के कई सारे स्केल स्कूल के बच्चों ने बनाए।
आज प्रार्थना सभा में गांधी जी के विभिन्न रूप (अलग-अलग काम) दिखाते हुए बच्चे बहुत खुश थे। वे आज तौलने के लिए नदी के पत्थर लाए थे। उनको तौलने के बाट जब मिले तो बच्चे अपने-अपने पत्थर तौल कर अपने स्वयं के बाट बनाने लगे। ऐसे करते-करते कक्षा में 1000 ग्राम से लेकर 100 ग्राम तक के बाट तैयार हो गए।

ध्यान में रखने की बातें

21 सितम्बर 2007

मैंने कहा- सोच कर दो-तीन ऐसी बातें बताओ जो तुमने अभी कक्षा तीन में सीखी है लेकिन वो तुम्हें जीवन-भर याद रहेगी। बच्चे सोच में पड़ गए। फिर एक उठा और बोला हमने पेड़-पौधों को उगाना सीखा है और बड़े होंगे तब

भी ऐसा करते रहेंगे। तभी एक ने कहा पानी को भी ध्यान से वापरना है। नहीं तो कमी पड़ जाएगी। एक लड़की (भावना) ने कहा कि चीज़ों की लम्बाई का अंदाज़ा तो अब हम बड़े होंगे तो और भी अच्छा लगा ही लेंगे। आज मुझे ज़रा-सा एहसास हुआ कि जीवन से जुड़ी शिक्षा शायद ऐसी ही होती होगी।

सवाल करने में क्या शर्माना!

18 अक्टूबर 2007

हम वयस्क बच्चों की बातों पर कभी गौर नहीं करते। लेकिन उन्हें चर्चा में हिस्सा लेने का मौका बराबर मिले तो वे भी अपनी बात आराम से कहते हैं। अरविंद थोड़ा जल्दी बोलता है। और इसीलिए वह बोलने से घबराता था। पर अब वो अपनी हर बात कहने की पूरी कोशिश करता है। यातायात के साधनों पर चर्चा करते समय वो बोला- मैडम बर्फ पर कौनसी गाड़ियां चलती है? एक बार तो मैं भी सोच में पड़ गई। तो उसने कहां मैंने किताब में कुत्ते वाली गाड़ी देखी थी।

मैंने पूछा- कुत्ते कैसे गाड़ी चलाते है? उसने कहा वहां के कुत्ते अलग तरह के होते हैं। तब मैंने फिर उन्हें रेंडियर के बारे में बताया। फिर उसने एक और प्रश्न कर दिया, क्या स्केटिंग भी यातायात के साधन में माना जाएगा? सभी उसकी बात पर हंसने लगे। मुझे अब एक बात अच्छी तरह समझ में आ गई कि चाहे 25-30बच्चों की पूरी कक्षा में एक ही बच्चा सवाल पूछे, पर उस बात की तरफ सभी का ध्यान जाता है। और अगली बार दूसरे बच्चे भी चर्चा करते समय सवाल पूछने से नहीं डरते।

समस्या का हल बच्चे भी कर सकते हैं

24 अक्टूबर 2007

बर्तनों की धारिता मापने के लिए आज कक्षा में बच्चों ने लीटर वाले माप देखे और कुछ बर्तनों की धारिता माप रहे थे जिसमें थोड़ी सी जगह खाली रहने पर मैंने पूछा कि अगर 20 मिमी से कम नापना होगा तो क्या करेंगे। तब सब सोच में पड़ गए लेकिन बच्चों को कुछ जवाब नहीं मिल रहा था। दूसरे दिन ''राहुल'' एक छोटा प्लास्टिक का कप (दवाइयों को नापने वाला) लेकर आया कि यह मेरे भाई की दवाई के साथ मिला था इस पर 2, 5 और 10 मिमी के निशान बने हैं इससे हम नाप सकते हैं। उसने लीटर की नाप वाले बर्तनों के क्रम में सबसे आखरी में इस कप को रख दिया। यह कप यदि मैंने लाकर बताया होता तो उसे उतनी खुशी नहीं होती जितनी उसके खुद के द्वारा समस्या का पता लगाने पर उसे हुई थी।

कक्षा पुस्तकालय : एक दिलचस्प अनुभव

इस वर्ष सत्र में मुझे कक्षा तीसरी पुस्तकालय में बच्चों के साथ सीखने-सिखाने का मौका मिला। बच्चों को कहानियां पढ़ना अच्छा लगता है ये तो मैं जानती ही थी परन्तु पूरे साल भर बच्चों की पढ़ने के प्रति रूचि बनी रहे और बढ़ती भी रहे इसके लिए मुझे कुछ ठोस योजना बनानी थी। मैंने सोचा कि जिस विषय-वस्तु के बारे में बच्चों को कक्षा में पढ़ाया जा रहा होगा (जैसे- पौधों, जन्तु, त्यौहार) वैसी ही यानि उन्हीं विषयों से संबंधित और पुस्तकें बच्चों के लिए कक्षा पुस्तकालय में उपलब्ध करवानी होगी जिससे उनकी उस विषय-वस्तु के बारे में समझ भी बढ़ेगी और पढ़ने में रूचि भी बढ़ेगी। मैंने ऐसा ही किया परन्तु शुरूआत में मुझे दो परेशानियों का सामना करना पड़ा। एक तो अलग-अलग विषयों से संबंधित ऐसी पुस्तकें कम ही उपलब्ध थी जो छोटे बच्चे (7-8 साल) पढ़ सके और दूसरा अधिकतर बच्चों को कहानियां पढ़ना ही अच्छा लगता था।

कई दिनों तक बच्चे केवल कहानियों की किताबें पढ़ते रहे वे भी केवल वही बच्चे जिन्हें लिखी बातें पढ़ कर समझ में आती थी। जिन्हें पढ़ना नहीं आता था उनकी तो कोई रूचि ही नहीं थी। मैंने सभी बच्चों को किताबों की ओर आकर्षित करने के लिए कई तरीके सोचे जिनमें से कुछ तरीके कामयाब रहे और सभी बच्चों को किताबों में अपने लिए कुछ न कुछ मज़ेदार और काम की बात मिल ही गई और इस तरह कहानियों के अलावा भी वे बहुत सारी चीज़े किताबों में ढूढ़ंने लगे और मुझे भी बताने लगे। कुछ मुख्य तरीके जो सफल हुए वे इस प्रकार हैं-

- बच्चों को विषय-वस्तु पर आधारित चित्र बनाने को कहा गया।
- पहेलियों और कविता ढूंढ़ कर लिखना (विषय संबंधी) और कक्षा में लगाना।
- मुखौटे बनाना, जिसका उपयोग वे नाटक में करते हैं।
- अंग्रेजी के शब्दों को चित्र से मिलान कर पढ़ना।
- विषय-वस्तु से संबंधित जानकारी पढ़ना जैसे- पेड़-पौधे, जन्तु, पानी, त्यौहार, यातायात आदि और उसे डिस्प्ले बोर्ड पर लगाना।
- विज्ञान के छोटे-छोटे प्रयोग किताब से पढ़कर स्वयं करना और मौखिक परीक्षा में भी प्रयोग करके दिखाना। इन सभी कामों के लिए वे किताबों की तरफ आकर्षित हुए।

इन तरीकों के अलावा एक तरीका मुझे जो सही लगा वो ये था कि जो किताबें बच्चे नहीं पढ़ते उसे मैंने स्वयं पढ़ कर सुनाई जिससे उस किताब के प्रति उनकी रूचि बनी। और हर बच्चे ने इस किताब को पढ़ने का प्रयास किया। इस प्रकार सभी बच्चों को कक्षा पुस्तकालय की किताबों के साथ समय बिंताने वाले पीरियड धीरे-धीरे बेहद अच्छे लगने लगे।

शहनाज़ डी.के. विद्या भवन बुनियादी माध्यमिक विद्यालय, रामगिरि, उदयपुर में पढ़ाती है।

नई तालीम की प्रासंगिकता

गोविंद रावल

एक मित्र ने पूछा आप नई तालीम की बात करते हो। किन्तु यह तालीम तो गांधी जी ने सन् 1937 में दी थी। उसे बताए 70 साल हो गए। तो अब तो उसे 'पुरानी तालीम' ही कहनी चाहिए। फिर भी आप लोग 'नई तालीम' जैसै शब्द क्यों प्रयोग करते हैं?

मैंने कहा– मेरे दोस्त, यही तो नई तालीम का राज़ है। यह तालीम आज भी 'नई तालीम' ही है और आगे भी नई तालीम ही रहेगी। उसने पूछा भला, इसके पीछे क्या राज़ है। मुझे बताइए तो सही! तब मैंने कहा– जो नित्य नई रहती है वह है ''नई तालीम।'' नित्य नूतन, नई तालीम। नई तालीम का काम है– जो नए–नए प्रश्न खड़े हो उसका हल बताए। यही है नई तालीम।

गांधी जी ने स्वयं कहा था कि – मैंने दुनिया को दो–चार चीज़ें दी है। किन्तु उन सब में यदि मेरी कोई लास्ट एण्ड बेस्ट चीज है तो वह है– नई तालीम।

गांधी जी ने स्वयं कहा था कि – मैंने दुनिया को दो–चार चीज़ें दी है। किन्तु उन सब में यदि मेरी कोई लास्ट एण्ड बेस्ट चीज़ है तो वह है– नई तालीम। गांधी जी बनिया थे। वे हर एक शब्द माप–तौल कर बोलते थे। यदि स्वयं वे कहते हैं कि नई तालीम मेरी सर्वोत्तम देन हैं तो हमें उन पर गौर से सोचना चाहिए। उन्होंने तो यहां तक कहा था कि– यदि भारत उसका सोच समझकर प्रयोग करेगा तो उसकी शक्ल बदल जाएगी।

उन्होंने तो यहां तक कहा था कि यदि भारत को देखकर दुनिया अमल करेगी तो दुनिया की भी शक्ल बदल जाएगी। तो गांधी जी की यह एक अनमोल देन है, जो हमें प्राप्त हुई है।

शिक्षा का असली काम है– बंधनों से मुक्त कराना। ''सा विद्या या विमुक्तये।'' आज सारी मानव जात कई प्रकार के बंधनों से बंधी हुई है। सबसे जाली बंधन है– अपने काम, क्रोध, विकार। जो हमें नचाते हैं, कूदाते हैं, मारते हैं, हंसाते हैं, रूलाते हैं, मिथ्याभिमान में डूबोकर मराते हैं, मारते हैं। वैयक्तिक रूप से तो सही किन्तु सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक, धार्मिक सभी रूपों में यह एक उन्माद जगाते हैं। जो हमारा है, वही श्रेष्ठ है। उसे सबको स्वीकार करना चाहिए। मम् सत्यम् ही सत्य है। उसे जो मान्य नहीं करेंगे, उसे हम तबाह कर देंगे। हमने जो जीवन शैली बनाई है, उसे ही सबको स्वीकारनी होगी वरना मौत के घाट उतारेंगे।

ऐसी मानसिकता आधुनिक शिक्षा की पैदाईश है।

गांधी जी ने उसी के सामने बगावत की, सत्याग्रह किया। बाग में सभी फूल एक ही रंग के, एक ही किस्म के होने चाहिए। क्या यह ठीक है? बाग तो वही कहा जाता है– जिसमें किस्म–किस्म के फूल होते हैं। हरेक का रूप, रंग, सुगंध, शान–शौकत निराली होती है।

हर एक में कोई न कोई सृजन करने की क्षमता छिपी हुई है। शिक्षा का उद्देश्य इस सर्जकता का आविष्कार करना है उसे रूंधना नहीं। सबको एक ही सांचे में नहीं ढालना चाहिए। व्यक्तिगत रूप से ऐसा अवसर हर एक को मुहैया कराना चाहिए।

हर एक को एक ही ढांचे में न ढालें। अपनी रूचि, वृत्ति, लक्षण, रस, क्षमता के मुताबिक खिलने दो।

हर एक में कोई न कोई सृजन छिपी हुई है। शिक्षा का उद्देश्य इस सर्जकता का आविष्कार करना है उसे रूंधना नहीं। सबको एक ही सांचे में नहीं ढालना चाहिए। व्यक्तिगत रूप से ऐसा अवसर हर एक को मुहैया कराना चाहिए।

दूसरी और व्यक्ति जंगल में अकेला नहीं रहता। वह एक सामाजिक प्राणी भी है। तो समाज के प्रति भी उसके कोई न कोई दायित्व हैं। तो उसकी एक जबावदेही जिम्मेदार नागरिकता की भी होनी होगी।

समाज को नुकसान होता हो ऐसा उसका जीवन, व्यवसाय, व्यापारिक गतिविधि नहीं होनी चाहिए। उसका भान भी शिक्षा के जरिए खड़ा करना होगा।

मनुष्य प्रकृति का फरज़ंद है। प्रकृति उसकी माता है। उस माता को मारने वाली, उसका शोषण करने वाली उसकी जीवन शैली नहीं होनी चाहिए।

हम देखेंगे कि आधुनिक शिक्षा के फलस्वरूप व्यक्ति, समाज का और प्रकृति का शोषण करके उन सबको तबाह करके कुछ मुट्ठी भर लोगों की सुख–सुविधा के लिये काम करता है। यह आधुनिक शिक्षा की देन है।

हम देखेंगे कि आधुनिक शिक्षा के फलस्वरूप व्यक्ति, समाज का और प्रकृति का शोषण करके उन सबको तबाह करके कुछ मुठी भर लोगों की सुख–सुविधा के लिये काम करता है। यह आधुनिक शिक्षा की देन है।

गांधी जी उनको पलट देना चाहते थे। यह काम नई तालीम ही कर सकती है। जो नई चेतना का निर्माण करके एक नया मनुष्य कर सकता है। वह नया मनुष्य ही नया समाज निर्माण करेगा जिसमें सर्व का उदय होगा। ऐसा एक अभिनव क्रान्तिदर्शन ही नई तालीम है। वर्तमान की जो समस्याएं हैं उसको समाप्त करने के लिए ही नई तालीम का जन्म हुआ है। हम उसमें छिपे गंभीर अर्थों को समझें।

वर्तमान युग के क्या प्रश्न हैं? गरीबी–बेरोजगारी, प्रदूषण, आतंकवाद, अनारोग्य, असमानता इत्यादि।

क्या आधुनिक शिक्षा के पास इसका जवाब है? आधुनिक शिक्षा Have और Have not के दो वर्ग खड़े करके, सामाजिक और आर्थिक असमानता पैदा करके गरीबी और बेरोजगारी को और बढ़ावा देती है। इसी की कोख से तो आतंकवाद जन्म लेता है।

हां, आधुनिक युग में ज्ञान का विस्फोट हुआ है। विज्ञान और टेक्नोलॉजी के जरिए सारी चीज़ों के उत्पादन के ढेर लगे हैं। लेकिन आम आदमी के पास रोजगार न होने से बिना क्रयशक्ति के अभाव में वे उनको खरीद नहीं पाता।

नई तालीम सिर्फ शालेय शिक्षा नहीं है। यह तो गर्भाधान से आरंभ होकर मृत्युपर्यंत चलती प्रक्रिया है। यह जीवन शिक्षा है। जो जीवनपर्यंत– आजीवन चलती है। जो जीवन की हर एक क्रिया–प्रक्रिया वैज्ञानिक तरीके से जीवन पोषक स्वरूप में कलात्मकता सिखाती है।

आधुनिक शिक्षा उसको काम नहीं देती। काम करने की तालीम भी नहीं देती तो वह शिक्षित बेकार भला आतंकवादी क्यों न बनेगा? आधुनिक शिक्षा देश को जवाबदेह नागरिक नहीं दे पाती। आधुनिक शिक्षा सिर्फ क्लास के लिए है– मास के लिए नहीं। इस शिक्षा का ढंग ही ऐसा है। जो लाखों रुपए फीस दे सके उसको पढ़ाए, बाकी को नहीं। फिर भी यह विडंबना है कि ऐसी स्कूल 'पब्लिक स्कूल' कही जाती है। जिसमें आम समाज को प्रवेश के लिए तो हर दम दरवाजें बंद ही रहते हैं।

आधुनिक शिक्षा का लक्ष्य है– पैसा कैसे बनाना। पैसा बनाने में चाहे व्यक्ति और समाज शोषण होता हो, प्राकृतिक का प्रदूषण होता हो, भ्रष्टाचार पनपता हो। गरीबी और बेरोजगारी बढ़ती हो। अनारोग्य बढ़ती हो।

नई तालीम सिर्फ शालेय शिक्षा नहीं है। यह तो गर्भाधान से आरंभ होकर मृत्युपर्यंत चलती प्रक्रिया है। यह जीवन शिक्षा है। जो जीवनपर्यंत– आजीवन चलती है। जो जीवन की हर एक क्रिया–प्रक्रिया वैज्ञानिक तरीके से जीवन पोषक स्वरूप में कलात्मकता सिखाती है। नई तालीम एक अच्छी शिक्षा पद्धति के रूप में तो स्वीकृत हुई है किन्तु नई तालीम को इतने से समाधान नहीं है। नई तालीम का असली मकसद है– एक नया समाज, सर्वोदयी समाज का निर्माण। यह कोई वर्ग विशेष, जाति विशेष, धर्म विशेष, देश–विशेष के लिए काम करना नहीं चाहती। वह तो पूरी मानवजाति और प्रकृति का सर्वदेशीय विकास उदय करने का लक्ष्य रखती है। उसका माध्यम न सिर्फ उद्योग है उसका माध्यम तो पूरा जीवन है– सिर्फ व्यक्ति का ही नहीं पूरी सृष्टि का।

आधुनिक शिक्षा का लक्ष्य है– पैसा कैसे बनाना। पैसा बनाने में चाहे व्यक्ति और समाज शोषित होता हो, प्राकृतिक का प्रदूषण होता हो, भ्रष्टाचार पनपता हो। गरीबी और बेरोजगारी बढ़ती

हो, अनारोग्य बढ़ती हो, हिंसा बढ़ती हो, अशांति फैलती हो। असलामती पैदा होती है, कुछ भी होता रहे फिर भी हमें पैसा मिलना चाहिए।

क्या भला, ऐसी शिक्षा पैसा कमाने वालों को भी चैन की नींद सोने देगी? पैसों का भस्मासुर उनको ही भस्म नहीं कर देगा? ऐसी यह शिक्षा किसका भला करेगी?

गांधी की नई तालीम चाहे आज की चकाचौंध में अंधे हुए लोगों को न दिखाई दे, किन्तु युग का तकाजा है कि सर्व के उदय के बिना वर्ग विशेष चाहे कितने भी आसमान में उड़े, वे सुख की चैन नहीं सो सकते।

इसलिए तो दुनिया के महान शिक्षाशास्त्री भी मानव जाति को अस्त–व्यस्त करने वाली शिक्षा का विरोध कर रहे हैं।

दिमाग खाली और हृदय शून्य हो। हाथ–पैर बेकार बने, ऐसी शिक्षा अब नहीं चलेगी।

किसी चीज़ का अतिरेक होता है तो समझो कि उसका अब विनाश होने वाला है। एशिया और चीन में साम्यवाद ने जो तबाही खड़ी की इससे ही उसका विनाश हुआ। वे लोग मार्क्स के वचन को ही भूल गए कि हर एक चीज़ के विकास में ही उनके विनाश के बीज अंतर्निहित होते हैं।

आज पूंजीवाद का बोलबाला है। आज की शिक्षा भी उसकी पैदाइश है।

गांधी की नई तालीम चाहे आज की चकाचौंध में अंधे हुए लोगों को न दिखाई दे, किन्तु युग का तकाजा है कि सर्व के उदय के बिना वर्ग विशेष चाहे कितने भी आसमान में उड़े, वे सुख की चैन नहीं सो सकते।

गूर्जर विश्व कवि श्री उमाशंकर ने गाया है कि–

भूख्या जनोनो जठराग्नि जागशे।

खंडेरनी भस्मकणि न लांघशे।

जब भूखे लोगों की जठराग्नि जागेगी तब खंडेर की कणि भी भस्म हो जाएगी।

गोविंद रावल, विश्वमंगलम् अनेरा, गुजरात– 383 001

विशेष

शिक्षा का सशक्त माध्यम प्रवास विद्या

राधा भट्ट

''सबको शिक्षा मिलनी चाहिए।'' परन्तु कैसी शिक्षा? यह मेरा प्रश्न होता है। वर्तमान प्रचलित शिक्षा तो कई समस्याओं का सृजन करने वाली शिक्षा पद्धति बनी हुई है, माना तो गया है कि इस शिक्षा से निजी विकास होता है। किन्तु वास्तविकता यह है कि समग्र रूप से निजी विकास भी नहीं हो पाता और सच में शिक्षा का संबंध मात्र निजी विकास भी नहीं हो पाता। और सच में शिक्षा का संबंध निजी विकास से है भी नहीं, वरन् यह समाज के सम्पूर्ण ढांचे से संबंधित है। शिक्षा चारों और फैले मानव समुदाय की स्वतंत्रता, लोकतंत्र, समुचित विकास, सम्पूर्ण पर्यावरण एवं अर्थव्यवस्था को विकसित करने वाला असर डाले, व इनका आधार भी बने, यह है शिक्षा की वास्तविक सार्थकता।

ऐसी आधारभूत गुणवत्ता वाली शिक्षा विद्यालयों की चार दिवारों के भीतर किए जाने वाले अक्षर ज्ञान एवं बौद्धिक अभ्यास में सीमित नहीं हो सकती। इसके लिए शिक्षा के कार्य को व्यक्ति और समाज के सम्पूर्ण जीवन के पूरे विस्तार में गूंथना होता है। बच्चे को आगे बढ़कर उसके घर–परिवार, खेत–आंगन, गांव–समाज और पूरे देश–दुनियां तक का ज्ञान व अनुभूति, प्रत्यक्ष–दर्शन व अनुभव, उसमें शरीर–मन–बुद्धि में हम जानते हैं कि शिक्षण–पद्धति के बदले शिक्षण–संस्कृति की दिशा दिखाने वाले महात्मा गांधी ने भारत की परिस्थिति के अनुरूप शिक्षा का स्वरूप हमारे समाने बुनियादी शिक्षा के रूप में रखा था। उन्होंने कहा था, ''मैं इतना अवश्य चाहूंगा कि बुद्धि के विकास के साथ–साथ शारीरिक श्रम और हृदय का शिक्षण भी होना चाहिए। प्रत्येक राष्ट्रीय शिक्षण–संस्था की कीमत और उपयोगिता उसके विद्यार्थियों की बुद्धिमता के तेज से नहीं, बल्कि राष्ट्रीय चरित्र से तथा पींजन, चर्खा और कर्घा चलाने की कुशलता से ही आंकी जाएगी।

(नवजीवन 26.12.1924, शिक्षण और संस्कृति पृष्ठ–159)

यह राष्ट्रीय जनसमाज के प्रत्यक्ष दर्शन व उसमें की गई सीधी भागीदारी से बनता है। यह राष्ट्रीय चरित्र की समझ, अपने देश के भूगोल, उसमें रहने वाले जन समुदाय, उसी जीवन शैली, उनके घर, गांव, नगरों की अपनत्व और प्रीतिभरी दृष्टि से देखने पर बनता है, उनके दर्दों की कसक पहचानने से बनता है, उनकी क्षमताओं से उल्लासित होने से बनता है। तब बच्चा व्यक्ति के ''खोल'' (आवरण) से बाहर निकलकर समाज व राष्ट्र के आकार में स्वयं को स्थापित करता है।

इस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए शिक्षा की एक बहुत सशक्त विद्या है, **''प्रवास विद्या''**। मुझे प्रवास–विद्या स्वरचित शब्द लगा था पर मैं आश्चर्य मुग्ध हो गई जब ''शिक्षण और संस्कृति'' के पृष्ठ–75 पर बापू ने भी इसे ''प्रवास विद्या'' कहा है, उनके विचार इस प्रकार हैं–

''इसके बाद क्रम से भूगोल विद्या, जिसे ''प्रवास–विद्या'' भी कहते हैं, आएगी। अगर यूरोप ने असाधारण उन्नति की है तो उसका कारण सम्राट अकबर के दिनों से यूरोपियन लोगों का यात्रा का व्रत लेना ही है। तब से आज तक वे लगातार घूमते ही रहे हैं। इसका लालच और जिज्ञासा अदम्य है। हमें भी लालच छोड़कर केवल जिज्ञासा से प्रवास को बढ़ाना चाहिए। जिससे घूमकर भारत वर्ष का दर्शन नहीं किया, वह स्नातक ही नहीं का जा सकता, यह कहने में मैं कोई आपत्ति नहीं देखता।''

(गूजरात विद्यापीठ, अहमदाबाद में दिए गए भाषण का अंश, हिन्दी नवजीवन 23.1.1930)

इस ''प्रवास विद्या'' के उत्साहवर्धक परिणामों का अनुभव मैंने एक शिक्षिका के रूप में लक्ष्मी आश्रम की बुनियादी तालीम की छात्राओं के साथ प्राप्त किए हैं।

वे दिन भूदान ग्रामदान आंदोलन के थे, जिसे विनोबा ने ''यज्ञ'' कहा था। लक्ष्मी आश्रम इस यज्ञ धारा में अपनी सभी छात्राओं व शिक्षिकाओं को लेकर उतर गया था। सालभर हमारा कुछ समय पद यात्राओं की तैयारी करने में जाता और शेष समय पद यात्राओं में लगता था। जिन घाटियों या पर्वतमालाओं के बीच पदयात्रा चलने वाली थी, उसके भूगोल, इतिहास, जन–जीवन तथा विशेषताओं को छात्राओं को बताना, उस क्षेत्र के संबंध में तथा भूदान ग्रामदान के संबंध में पत्रिकाएं व पुस्तकें छात्राओं को पढ़ने को देना और पद यात्रा में गाए जाने वाले गीतों, नृत्यों तथा नुक्कड़ नाटकों (आंगन नाटकों) तथा नारों आदि का उनसे अभ्यास करवाना। पूर्व तैयारी का यही स्वरूप होता था। ''भूदान यज्ञ'' पत्रिका के नित्य वाचन से ''जमीन जोतने वाले को जमीन मिले'' तथा ''दानं सम विभागम्'' के क्रांतिकारी विचार से ही सुपरिचित होती थी। छात्राएं व शिक्षिकाएं अपने सामान को पिट्ठू की पीठ पर लादकर पदयात्रा में निकल जाती थी। राह में चलते हुए उनके नारों व गीतों के बुलन्द स्वर घाटियों को गुंजाते रहते थे। गांव में पहुंचकर शिक्षिकाओं व छात्राओं का पूरा समूह सर्वप्रथम व्यस्त महिलाओं के साथ श्रम में जुट जाता, कोई ऊखल में धान कूटने लगती तो कोई उनके साथ गायों के लिए चारा काटने लगती, कोई खेती में गुड़ाई–निंदाई में उनका साथ देती। कुछ छात्राएं ग्राम सफाई करने लगती। पूरे गांव में लड़कियां ही लड़कियां छा जाती और थोड़ी देर में गांव की लड़कियों व सभी महिला, पुरूषों व बच्चों से उनका परिचय हो जाता। कुछ बच्चे उनकी ऊंगली पकड़कर मेरे पास आते, कभी कोई छात्रा किसी भूमिहीन, अकेली महिला का दर्द बताने आतीं। कभी किसी छोटी भूमि पर उगाई सुंदर उपज का गुणगान ये छात्राएं करतीं। इस श्रम–कार्य के बाद गपशप करते हुए उन्हें गांव में भूमिवान–भूमिहीनों, गरीब–अमीरों,

सवर्ण–अवर्णों तथा जल–जंगल–जमीन का अनौपचारिक सर्वेक्षण कर लेना होता था। इसकी पूरी जानकारी तब भी उन्हें मिलती थी जब वे उनके साथ काम कर रही थी और तब भी जब वे सभी गांव के विभिन्न परिवारों में भोजन करने जाती थी। इस प्रकार गांव की खेती, जंगल, पानी, पर्वत, उद्योग–व्यापार व ठेकेदारी सबका खाका उनके सामने खिंच जाता था।

तब होती थी वे सभाएं, जिनमें भूदान का करूणामूलक संदेश व ग्रामदान, ग्रामस्वराज्य का क्रांतिकारी विचार प्रस्तुत करना होता था। कभी दिन–दोपहर के समय गांव के किसी बड़े आंगन में जाड़ों की गुनगुनी धूप में सारे गांव के लोग एकत्र होते थे तो कभी शाम को आंगन के बीच जलती धूनी के चारों ओर सभा आयोजित होती थी। तब भूदान पर छोटे भाषणों के साथ छात्राओं द्वारा नुक्कड़ नाटक–गांव की स्थिति के अनुरूप कोई नव–रचित लघु नाटिका या फिर ''कितनी जमीन'' जैसे टालस्टाय की कृति को अभिनीत किया जाता। साथ में भूदान–विचार पर स्थानीय भाषा में रचित कुमाउंनी गीत व सामूहिक नृत्य या ''हवा और पानी सी धरती जन–जन में बंट जाये...'' जैसे भूदान ग्रामदान के देशभर में गूंजने वाले हिन्दी गीत गांव में एक समा बांध देते थे। मुझे यह सुखद आश्चर्य होता था कि छात्राएं दिनभर में ली गई गांव की विशेष जानकारी को भी अपने नाटक में स्वतः ही जोड़ लेती थी, ताकि संदेश गांव के लिए अपना बन जाए और हम शिक्षिकाएं इसलिए भी खुश होती कि हमें यह प्रमाण मिल जाता था कि छात्राएं ने गांव का समाज शास्त्र व अर्थशास्त्र अच्छी तरह खोज निकाला है और समझा है। कई–कई गांवों की स्त्रियां कहती थी, ''बड़े लोगों के भाषणों से अधिक हमें लड़कियों के नाटकों से बात समझ में आई है।''

एक और भी सामूहिक कार्यक्रम था जो बच्चे जब भी उपलब्ध हों तब छात्राओं व शिक्षिकाओं की इस भूदान टोली के द्वारा किया जाता था। वह था बच्चों को सामूहिक खेल खिलाने का काम। इसमें भी बच्चों के गुणधर्म का काम होता था और छात्राओं को नेतृत्व करने व व्यक्तित्व–विकास का अवसर मिलता था।

शाम को दो काम इस पदयात्रा टोली के लिए लाजमी थे। पहला दिन भर का मूल्यांकन तथा डायरी–लेखन। इतिहास, भूगोल, समाजशास्त्र व अर्थशास्त्र के व्यावहारिक शिक्षण के साथ हिन्दी भाषा में भाषण देने व डायरी लिखने के कारण भाषा का शिक्षण भी होता था। कल को ये छात्राएं गांव के कार्यकर्ता के रूप में सेवा व समाज परिवर्तन का काम कर सकें, इसका भी व्यावहारिक शिक्षण न पदयात्राओं से मिलता था।

इसी प्रकार शराब विरोधी आंदोलनों व चिपको आंदोलन का सत्याग्रह काल भी हमारे विद्यालय के लिए शिक्षा में समवाय का साधन बन गया था। इसमें हमारा अनुभव था कि आंदोलनों को बल देते हुए छात्राओं ने स्वयं भी बौद्धिक, शारीरिक एवं भावनात्मक शिक्षण प्राप्त किया था। इस शिक्षण शैली में शिक्षकों को बहुत जागरूक व समझयुक्त होना होता था। उन्हें स्वयं इस प्रकार की शिक्षण शैली पर श्रद्धा व विश्वास होना चाहिए था तभी इस प्रक्रिया के उत्तम परिणाम सामने आते थे। आज भी लक्ष्मी आश्रम, उत्तराखंड में ''नदी बचाओ'' आंदोलन में अपनी छात्राओं को ''प्रयास विद्या'' का अनुभवजन्य ज्ञान दे रहा है। ऐसे सत्याग्रहों द्वारा दी जाने वाली शिक्षा के बारे में गांधी जी ने लिखा है–

''सत्याग्रह ही सबसे उच्च और सर्वोत्तम शिक्षा है। ऐसी शिक्षा बच्चों को साधारण पढ़ाई–लिखाई के बाद

नहीं, बल्कि उसके पहले ही दी जानी चाहिए। इस बात से इंकार नहीं किया जा सकता कि बच्चों को अक्षर–ज्ञान और संसार की जानकारी हासिल करने से पहले यह जानना चाहिए कि आत्मा, सत्य और प्रेम क्या है और आत्मा में कौन सी शक्तियां छिपी पड़ी हैं।''

वास्तविक शिक्षा का यह एक आवश्यक अंग होना चाहिए कि बच्चा सीख ले कि जीवन–संघर्ष में प्रेम द्वारा, सत्य द्वारा शत्रु और कष्ट–सहन द्वारा हिंसा पर आसानी से विजय पाई जा सकती है।''

(इंडियन ओपीनियन स्वर्ण अंक 1914, संपूर्ण गांधी वाड.मय, खंड–12 पृष्ठ–452)

''प्रवास विद्या'' में उक्त समाज परिवर्तनकारी अभियानों व आंदोलनों का एक महत्वपूर्ण स्थान है। किन्तु सामान्य रूप से गांवों में पदयात्रा करते हुए सभाओं में नाटकों, गीतों व लघु भाषणों के द्वारा जागरूकता लाने के कार्यक्रम, समाज की स्थितियों का बच्चों द्वारा अनौपचारिक सर्वेक्षण, सामूहिक सफाई, सामूहिक प्रार्थना, बच्चों को खेल खिलाना आदि करते हुए भी ''प्रवास विद्या'' का गहरा प्रभाव छात्राओं के जीवन पर पड़ते हुए मैंने देखा है। शिक्षा को प्रभावी बनाने के लिए शिक्षिका व छात्राओं के बीच एक अच्छी समझ होना, अत्यन्त आवश्यक है। शिक्षिका व छात्रों के बीच व्यक्ति से व्यक्ति का यह संबंध शिक्षिका बनते हुए मैंने इन्हीं प्रवासों में पाया था। दूसरी ओर छात्राएं भी कहती थी, ''हम गांवों से आई हैं परन्तु गांव को इस दृष्टि से हमने कभी देखा न था। इस प्रवास में गांव मानो भीतर से खुलकर हमारे सामने आ गया।'' यह केवल मुख से ही नहीं, उनके द्वारा रचित कविताओं, कहानियों, चित्रों व लेखों में भी प्रकट होता है।

डायरी लेखन ''प्रवास विद्या'' का एक अनिवार्य अंग था। यों तो लक्ष्मी आश्रम में डायरी लेखन तथा हस्तलिखित पत्रिकाओं का लेखन व सम्पादन सदा ही मौलिक लेखन के दो सफल माध्यम रहे हैं, परन्तु प्रवास को शिक्षण की दृष्टि से अधिक एवं विधियुक्त बनाने में डायरी लेखन बहुत सक्षम माध्यम बनती है।

सभी प्रकार के प्रवासों का अंतिम कार्य होता था, पूरे विद्यालय के सामने अपने प्रवास की ''चर्चा'' प्रस्तुत करना, यह ''चर्चा'', संवाद होती थी विवरण नहीं। प्रश्नोत्तर, अनुभूत टिप्पणियां व साझी अभिव्यक्ति को ही चर्चा कहा जाता था। अनुभवों का विस्तृत विवरण अपनी मासिक हस्तलिखित पत्रिका में दिया जाता था, जो भाषा व विचार की दृष्टि से अधिक सुव्यवस्थित व क्रमपूर्ण होता था।

मैंने हमेशा ही अनुभव किया कि आठ–दस या बारह दिनों की ऐसी पदयात्रा के बाद मेरी छात्राओं के व्यक्तित्व जैसे अचानक ही अधिक जिम्मेवार हो जाते थे। अपने व्यक्तिगत अर्थों (स्वार्थों) से निकलकर उनका चिंतन मानो समाज के दायरे में प्रवेश कर जाता था। मैं मानती हूं कि एक नागरिक की, एक सच्चा मानव बनाने की सही शिक्षा ऐसी ही होनी चाहिए जिसे गांधीजी ने राष्ट्रीय चरित्र कहकर अभिव्यक्त किया है।

आज सामान्य स्कूलों, कालेजों के छात्रों के ''प्रवास'' तो बहुत सारे होते हैं पर उन्हें ''प्रवास विद्या'' के रूप में परिणत करने की जरूरत है ताकि हमारे बच्चे समाज के सब तबके से भी हार्दिकता जोड़ सकें।

राधा भट्ट, अध्यक्षा, गांधी शांति प्रतिष्ठान, नई दिल्ली–2

फोटो फीचर

विद्या भवन बुनियादी विद्यालय, रामगिरि, उदयपुर की कहानी : तस्वीरों की जबानी

''बुनियादी शिक्षा : एक नई कोशिश'' विद्या भवन सोसायटी, उदयपुर एवं गूजरात विद्यापीठ, आश्रम रोड़, अहमदाबाद द्वारा संयुक्त रूप से प्रकाशित।